

पशौरा सिंघ ढिल्लों

www.PashauraSinghDhillon.com

मां बोली रिसर्च सेटर, लहौर

Maan Boli Research Center, Lahore

मां दे नां!

| ۷ | | | |
|---|---|---|---|
| a | ₹ | Ω | П |

| कवी अते कविता | (गुरबचन सिंघ भुल्लर) | 8 |
|-----------------------|----------------------|----|
| कविता दी कहानी | (पशौरा सिंघ ढिल्लों) | 28 |
| दुआ | | 43 |
| कवितावां अते गीत | | 45 |
| की रखीए नां इस आलम दा | | 46 |
| पींघां किथे पावां | | 48 |
| तली ते सीस | | 50 |
| समें दी डाची | | 51 |
| असीं पाहरू बणे | | 52 |
| पिआर दा गुणा फल | | 53 |
| तेरी मेरी सांझ | | 54 |
| चढ़नहारा दिन | | 55 |
| सितंबर 2001 (9/11) | | 56 |
| याद पॅथर | | 57 |
| जे रुख ही ना रहे | | 58 |
| गीत लिखदा हां | | 59 |

| हिंदूस्तान दे भाग | 61 |
|-----------------------|----|
| पगड़ी सँभाल जॅटा | 63 |
| अदबी ख़ानाजंगी दे नां | 65 |
| कला कुदरत | 66 |
| तेरी दीद | 68 |
| चॅकी | 69 |
| दिल | 71 |
| डाईनोसार दा कूच | 72 |
| शाहदी चानिणी दी | 73 |
| वक्त दी पहिचान | 74 |
| बे वसाही क़लम | 75 |
| जाद्गरी | 76 |
| काहदी लोअ | 77 |
| नाराज़ कानी | 78 |
| हिमते मरदां | 79 |
| मसीहा | 80 |
| स्रजां वेढ़े | 81 |

| लेखा जोखा | 82 |
|---------------------------|-----|
| बुझदी बलदी | 83 |
| मैं जुगन् हाँ | 84 |
| रब वरगा भरवासा | 85 |
| बँदे दे भाग | 86 |
| बस्ती रहन वाली है | 87 |
| जे पुतर हटां ते नईं विकदे | 88 |
| पैर खड़ावां | 90 |
| बुत दी श्लाघा | 91 |
| छॅज | 92 |
| ग़दरी बाबे | 94 |
| नवां जुग | 96 |
| पैसा पीर नहीं | 97 |
| तां मॅनां | 99 |
| सुण अँबर शहिज़ादीऐ | 100 |
| रूह मेरे पँजाब दी | 104 |
| आ कॅंडिया तैनू सीने लावां | 108 |

| कुरबानी | | 110 |
|-------------------------|-------------|-----|
| ठलृदा नहीं दरिआ | | 111 |
| उही है इह सितारा | | 112 |
| तू साथों मुखना मोड़ीं | | 113 |
| छनकणे | | 114 |
| नाल सलूक दे बोल वे माही | | 115 |
| लैला ख़ालिद | | 116 |
| कोमल शाइर | (बाबा नजमी) | 119 |

गुरबचन सिंघ भुल्लर

कवी अते कविता

पशोरा सिंघ ढिंलें मेरा पुराना रिश्तेदार है अते नवां मित्र। पुराना रिश्तेदार ऐस कर के कि उह मेरे छोटे भाई वर्गे दोस्त जसबीर भुलॅर दा भनवया है अते नवां मित्र ऐस कर के उस नाल नेड़ली सांझ पिछे जिहे उस समय ही बनी जदों मैनू अमरीका जाण दा अवसर हासिल होइआ। पर इह नेड़ली सांझ अजिही बण गई कि नवां मित्र नवां लगनों हट ही गिआ।

जसबीर दा किहणा है, पशोरा सिंघ रिश्तेदार ही नहीं, मेरे हमजमात वी हन। जदों पशोरा सिंघ ते में ख़ूबसूरत इनसान अते समर्थ लेखक ते गंभीर विचारिक जगजीत बराइ दे अमरीका वाले घर रल बैठे, उह दे ते पशोरा सिंघ दे वी हमजमात हेण दा पता लिगआ। ते इहनां कुझ एक मिलनीयां तों मगरों ही मैनृ वी जापण लिगआ जिवें पशोरा सिंघ दिंलें ते में वी एक दूजे नू ह्ण ना मिले होइए सगों बहुत पहिलां, स्कूल ते कॉलिज समय हमजमात रहे होईथे।

असीं, मैं ते मेरी जीवन साथण गुरचरन सान फ्रांसिस्को कोल बे-एरिया विच अपने घर, अपनी बेटी भावना कोल ठहिरे होए सी। फ़रैज़नो जो कार राहीं साथों ढाई तिन घंटे दूर सी, मेरे वडे वीर, मेरी भूआ दे पुतर, समाज

सेवक अते सरगर्म सभ्याचारिक कारकुन जसवंत सिंघ मांन दा शहर होण कर के साडी स्थान सूची विच शामिल सी। फ़रैज़ने दे वॅडे शहिर दे नाल ही पशोरा सिंघ ढिंलें दा शहिर मडेरा है।

एक दिन साडे नेड़े ही एक अदबी इकॅठ सी। पशोरा सिंघ ढिंलें बड़े हित नाल मिलिया अते उहने मडेरा आऊँण दा सदा दिता। मगरों जदों एक सज्न नाल उहदे मिठ बोलड़े हॆण दा ज़िक्र होया, उह बोल्या, जे कदी इिहनां नू गाउंदियां सुनो!

उहनों गाओंदियां स्नंन दा सबब वी छेती ही बण गिआ। मेरे लई अमरीकी पंजाबी कहानी कान्फ्रेंस दी प्रधानगी करन ते पर्चा पढ़न दा सबब बनिया तां उथे पशोरा सिंघ ढिंलें नाल फ़िर मुलाक़ात हैई। साडे साहितक रिवाज मुताबिक़ कहानी कान्फ्रेंस दे अंत उते कवी दरबार होया। मंच उते चढ़े पशोरा सिंह ढिंलें ने पहिलां तां बाहरों आए सजनां दा स्वागत कीता ते दिल्ली तें आए दिलदारां नू अपने घर मडीरा आऊन दा सदा दुहराया, फ़िर उहदी सुर गूँजी:

जे कोई साडी कला च भैरा क़ुदरत हेई तां उह आपे अपना रंग लिआए गी। (कला कुदरत)

कवी दी आवाज़ तां दिल दीआं तारां हिलाउन वाली है ही सी, उहदी कविता दे सवै भरोसे ने वी मैनृ मुतासिर कीता। फ़िर एक अजेही गल हेई

जिस दा उहदे ऐस सवै भरोसे नाल गूढ़ा सबंध सी।

उहनीं दिनी कैलीफोर्निया विच थां थां गदरी बाबियाँ दे मेले हो रहे सन।

एक मौक़ा अजिहा वी बनिया कि एक शहिर विच पंजाबीआं दे दो धड़ियाँ
वलों एक हफ़्ते दी विथ नाल गदरी बाबियाँ दे दो मेले मनाए जा रहे सन।

जदों ऐस दूहरे मेले दा उथों सदा दिता गिआ तां मेरे समेत बह्त सारे लोकां नू काफ़ी परेशानी हैई। की असीं गदरी बाबियाँ दी पिवत्र याद विच वी दूई द्वैत भूला के एक नहीं हो सकदे। ऐस जज़बे दी तर्जुमानी करदिआं अते ऐस व्रतारे दा संखेप विच ज़िक्र करदिआं मंच उते कवी पशोरा सिंह ढिंलें दी आवाज़ उची हैई: आवे वाज शहीद दी मढ़ी विचों मेरी मढ़ी ते दीवा जगाईउ ना जिचर कंढे गुलामी दे बीजदे ओ मेरी मढ़ी नू फुल छुहाईउ ना मेरी सुर थीं सुर जे मेलदे नहीं ऐवं गीत आज़ादी दे गाईओ ना (हिंदूस्तान दे भाग)

भिरिआ होइआ हाल ताड़ीआं नाल गूँज उठिआ। कवी ने सभ दीयां भावनावां बह्त मधुर गाइन, पर पूरी तरह निरपख अते सख़्त -सपशट शबदां राहीं ज़ाहिर कर दितीयाँ सन। पशोरा सिंह ढिंलें दा अपनी कविता विच भरोसा उहदी कविता दी लोक

मुखता अते, लोकां दीआं भावनावां दी पेशकारी उते उसरिआ होइआ सी। ते इह लोक मुखता हउन् चढ़दी उम्र सिरमौर गदरी, बाबा सोहन सिंह भखना दी बुकल विच बताऊँण दे प्राप्त ह्ए अदुती अवसर अते सुभाग दी देण सी। बाबा जी पशोरा सिंह ढिंलें दे निकट सबंधी सन। कवी ने बाबा जी दी जीवन शैली नेड़िउं वेखी वाची हेई सी, उहनां तों गदर लिहर दीआं बेमिसाल कुरबानीआं बारे सुणिआ होया सी अते ऐसे कारण वडा हो के गदर लिहर दे अदुती सूर- बीरता वाले इतिहास नू दिलचस्पी ते श्रद्धा नाल पड़िया जानिया होया सी। गदरी बाबियाँ दे मेलियाँ दे नां उते प्रवासी पंजाबीआं दी वँड दे सबंध विच उहदा तिखा प्रतिकरम ऐस पछोकड़ साहमने सुभाविक सी।

इह गदरी बाबियाँ प्रति सची श्रद्धा दा परगद्दावा ही सी कि मगरों एक दिन जदों असीं सान फ्रांसिस्को विखे उहनां दा युगांतर आश्रम वेखन दी इच्छा दसी पशोरा सिंह ढिंलें वी परिवार समेत साडे नाल हो लिया।

रिश्तेदारी कारण अते उहदे मिठे निघे सुभा कारण कवी नाल तां नेड़ता होई ही, उहदी कविता दी लोक मुखता कारण मनुखी समाज दीआं समकाली औकड़ां नू उहदे संबोधित होण कारण उहदी कविता नाल वी ऊनी ही नेड़ता हो गई।

एवं साडी स्थान सूची विच फ़रिज़नो दे नाल ही मडेरा वी एक थुड़ चिरी फेरी लई शामिल हो गया। पर समां आइआ तां संखेप जेही सोची गई इह

मुलाक़ात कई घंटियां तक फैल गई।

पशोरा सिंघ ढिंलें दा घर उहदे दिल वांग ही मोकला है। कलात्मक मकान दे अगे पिछे खुली भुली थां विच हरियाली, फुलदार, शानदार अते छां दार बिरछ बूटे। उहदा कम काजी जीवन एक लैंडस्केप आर्कीटैक्ट वजों बीतिआ है। उहने आरँभ पिंजौर बाग अते कैपीटल प्रोजेक्ट चंडीगढ़, जिस विच रोज़ गार्डन वी शामिल सी, तों कीता सी। ते इह उथे ही सी कि ना केवल उहदे किंतावर कम दी गुणता ही पछाण लई गई सी, सगों उहदी कविता वी प्रसंसा दी भागी बण गई सी। एक वडे समागम समे महिँदर सिंघ रंधावा वलों अपने गले दा हार उतार के मंच उते पशोरा सिंघ ढिंलें दे गले 'च पा दिते जाणा ऐसे गल दा सबूत सी। मगरों संयूक्त राष्ट्र अधीन कम करदियाँ अनेक देसां विच उहने अपनी कितावर योगिता दे अधीन कम करदियाँ अनेक देसां विच वसे पंजाबीआं दे निकट हलके विच अपनी कविता दे रंग वी खिड़ाई।

उहदे घर दे अगे पिछे दी लैंडस्केपिंग देखदियां माणदिआं अते उहदे मूहों ऐस सबंधी उहदीआं भविखी विउँतां सुनदियां मिहसूस होया कि उहन् लैंडस्केप आर्कीटैक्ट नालों लैंडस्केप आर्टिस्ट किहणा वधेरे दुकवां होवेगा ते उह फुलां, बूटियां, रॅगां, ख़ुशबूआं, पथरां अते पानीयाँ दे तिलसम दी अपनी जिस समझ दी गल करदा है, ओहदी इह समझ शबदां दे तिलसम बारे वी ऊनी ही सच है। उह शबदां नूँ अपने भावां दे वाहकां वजों ही नहीं वरतदा सगों उहनां दे रंग वी टहिकाउँदा है, उहनां दी ख़ुशबू वी

महकाउँदा है अते उहनां दी धुनी वी जगाउँदा है। लैअ, सुर, ताल विच बीड़े शब्द उहदे लई सतरंगी पींघ वी हंदे हन, प्रिकरती दी सुंगध वी अते सितार दे तार वी। जदों साहितक दौर चिलया, ना कवी नू कविता सुना के रज आ रिह सी अते ना सानूँ सरोतियाँ नू कविता सुण के। मेरे नाल रिश्तेदार सन असीं फ़रैज़नो प्रतना सी। फ़ैसला होइिआ कि इह बैठक साड़े शहिर दे नेड़े उहदी बेटी नवरीत दे घर फेर सजाई जावे।

नवरीत डाक्टर है अते उहदा पती सिमरत सिंघ सूचना टैक्नौलोजी दा ज्ञानवान है। पर दोवें कलात्मक रुचीआं दे मालिक हन। मॉर्गन हिलज़ शहिर विखे पहाड़ी दी सिखर उते बणे अपने घर दा चपा चपा उहनां ने अपने हथीं सजाइिआ शिंगारिआ है। विहदे विच जंगली हिरन घुमन आ जांदे हन अते घर दे पिछे झील ते उहदे पार पहाड़ीयां दी अदिख तक फैली होई लड़ी है।

ऐस ख़ूबसूरत माहौल विच साहितक महफ़िल दा आनंद होर वी वधीक सी। पशोरा सिंघ नाल बीबी इंद्रबीर अते बेटा दीपश, जो अंग्रेज़ी विच कहानीयां लिखदा है ते कालिज विच लैकचरार है, वी आए होए सन। रंग फ़िर ख़ूब जिमआ।

गॅलां गॅलां विच मैं रीउ-विसता शहिर विखे, जो उथों सौ क् मील दूर सी, जगजीत बराड़ कोल जाण दा ज़िक्र कीता तां पशोरा सिंघ ढिंलें ने दसिआ कि उह दोवें कॉलिज विच जमाती सन। उसे समें अगले दिन उथे पुजन दा प्रोग्राम बन गिआ।

जगजीत बराइ नाल मेरी पहिली मुलाकात तां अमरीकी पंजाबी कहानी कान्फ्रेंस समें ही होई सी जिथे उहने साडे अखौती विदवानां दे पर्चियां वर्गा नहीं सगों सच मुच दा विद्वता भरपूर पर्चा पेश कीता सी, पर लेखकां दे नाते साडी आपसी जाण पछाण पुरानी सी। परदेस जाण तों पहिलां लिखिआ उहदा नावल 'ध्प दिरया दी दोसती' मेरे चेते विच सजरा सी अते फिर समें समें उहदे शुभ इछुक कार्ड ते खत आउंदे रहे सन। उह जिना खूबसूरत अते मोह खोरा इनसान है, ऊना ही साहितक, सभ्याचारिक, समाजिक, आर्थिक ते राजनीतिक मामलियां दा गयावान है। उहदीयां गहिर गंभीर गॅलां अते पशोरा सिंघ ढिंलें दीआं दिल दे साज उते गाईयां कवितावां ने उथे खूब समां बिन्आं।

पशोरा सिंघ ढिंतें दीआं किवतावां विच भरपूर वन सुवनता सी। इहनां किवतावां विच चंगेरे जीवन दी भाल विच मजबूरी विच देस छडणा पिआ होण दा पछतावा सी। उह केवल अपने माँ पिउ मुतॅल्क ही नहीं सगों अपने पिंड दे सभ जृन खराबां लई अपनी देनदारी दे भार हेठ दब्या महसूस कर रिहा सी:

माँ सेजल नैणीं तकदी रही जूह पार लँघा पिउ मुड़ आड़िआ उह मेरीआं मॅनतां मनदे रहे ख़ूद जींदे जीन अज़ाबां दा लै चमक अमानत तुर आया संग चन चानिणी रलिया हाँ

मेरे सिर तों क़र्ज़ा नहीं लहिणा मेरे पिंड दे जून ख़राबां दा (की रखीए नां इस आलम दा)

इहनां कवितावां विच पंजाबीआं वलों पिपलां, बोहड़ां अते टाहलीआं वर्गे पुख्ता घनछावें सिभआचार नू छड के सफ़ैदिआं वर्गा फोका ते छां रिहत सिभआचार अपनाए जाण दा रोस वी सी। पिपलां, बोहड़ां, टाहलीआं, सफ़ैदिआं अते पींघां वर्गे साधारण शबदां नू उहने जिस ढंग नाल वडेरे अते डूँघे अर्थ दिते सन, उह देखन वाला सी:

पिपलां दे संग बोहड़ गवा लई बोहड़ां दे संग छावां टाहलीआं गईआं आए सफैदे पींघां किथे पावां (पींघां किथे पावां)

ते अपने महां पुरखां दे दसे हक़ सच दे राह तों उटल के अखौती आगूआं दे उझड़ पै जान दा झोरा वी सी: साडे रहिबर दी ते दिब- दृष्टिी सी की होइिआ रहिबर दे पैरो कारां नू (अैने फुल उगा)

देस दी किसानी, जिस नाल कवी दा लहू मास दा नाता है अते जिस नू

उह आर्थिकता दी चूल समझदा है, दी दुरदशा दे उह दो मूल कारण समझदा है। आर्थिक लुट खोह दा शिकार होणा अते अंध-विश्वासां विच ग़र्क़े होए होणा:

(किसानी) दिने लुट लई चोर बाज़ारीआं ने रातीं चूँड लई साधां दियां डेरिआं ने (हिंदूस्तान दे भाग)

किसानी नूँ ऐस मंदहाली विचों निकलन लई वँगारन वास्ते उहने देस भगत अजीत सिंह अते उहदे साथीआं वलों एक सदी पहिलां दिता गिआ होका फ़िर बुलँद कीता:

उठिआ ए फ़ेर तेरी होंद दा सवाल उई पगड़ी सँभाल जटा, पगड़ी सँभाल उई (पगड़ी सँभाल जटा)

किसानी दी निघरी हालत वांग ही समुचे देस दे आम लोकां दी बदहाल ज़िंदगी अते उहदे आर्थिक राजनीतिक कारण वी कवी साहमने स्पष्ट सन:

किस्मत कुल जहान दी तेज़ होई लिशके भाग किउं नहीं हिंदूस्तान तेरे नीवीं नज़र उदास मायूस चिहरे फ़िर्दे सिख, हिन्दू, मुस्लमान तेरे

असीं हो के वी नहीं आज़ाद होई किउं नहीं पुछदे लोक सवाल यारो देवां दोश ह्ण किहड़े फ़रंगीआं नू वध के देसीआं कीती कमाल यारो (हिंदूस्तान दे भाग)

इहनां सारे मौकिआं उते सुणीयां किवतावां ने मेरे साहमने अपना दोहरा महत्व उजागर कीता: देस दी वर्तमान हालत वल देखिदआं उहनां दी परसँगिकता अते भाईचारक, समाजिक, सभ्याचारिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विशिआं नू कला मई ढंग नाल पेश करन दी उहनां दी समर्था। ते इहदे नाल ही उजागर होइिआ कवी दा अमरीकी पंजाबी पतरां अते सभावां तक सीमित रहिणा अते भारती पंजाबी पाठकां तक पुजन वलों अवेसले रहिणा।

सुभावक सी कि मैं कवी दा ध्यान उसदी ऐस बेपरवाही वल खिचदा अते उहनू पंजाबी पाठक समूह तक पूजन दा उपराला करन लई पूरे ज़ोर नाल परेरदा, जिना ज़ोर में एक रिश्तेदार, मित्र, सरोते अते समकाली लेखक वजों पा सकदा सी। मैनू ख़ुशी है कि इह ज़ोरदार प्रेरणा रंग लिआई अते छेती ही कवितावां दा खरड़ा मेरे हथां विच पुज गिआ।

इस प्रागे विच शामिल कवितावां पढ़ के वडी तसँली ऐस तथ दी होई कि इह सारीआं दीआं सारीआं उसे लोक मुख रंग विच रँगीआं होईआं सन जिहड़ा कवी दे मूहों सुनीआं होईआं कवितावां विच लिशकदा सी। बहुत

वार अजिहा ह्ंदा है कि लेखक दीओं चोणवीओं रचनावां, जो उह महिफ़लां जां सभावां विच पेश करदा है, वाला रंग उहदी समुची रचना विच पतला पै जांदा है। पर ऐस सूरत विच अजिहा नहीं सी होइआ। पशोरा सिंघ ढिलों नू परदेस गिओं वर्रे बीत गए हन। परदेसी पंजाबीओं बारे एधरले लोकां नू इह भ्रम है कि ओह बादशाही जीवन माणदे हन। जान तोड़ मेहनत नाल कमाए उहनां दे डालर इधरलियां नू बिरछां नाल लगे अते सौखिओं ही तोड़े होए दिसदे हन। इधरों लोक इह डालर हथिआउण लई भांत भांत दे भेख धार के उधर जांदे हन। इहनां विचों सिरमौर हन संत जो धर्म दे आसरे डालर हूँझ के लिआउंदे हन। कवी उहनां दी अखौती धार्मिकता नू नंगा करदा है अते उहनां उते विअँग बाण कसदा है:

सँतां दे सुण फ़ीसां चंदे लालो दा अज सीना कँबे दो दो जौबां कर कर हँभे हथ जेबां वल जानो संगे किथे नानक ते मर्दाना 'रिद्दे ग़रीबी रंग मस्ताना लालो तॅके राह निमाना सँतां दा अज होर टिकाना

माया हसदी श्रद्धा रोई नानक दुनीआं कैसी होई (सालकु मीत ना रहेउ कोई)

कवी दे अपनाए देस दी जीवन शैली अते रहितल दे अनेक पख अजिहे हन जो रीस करन दे जोग हन, उहनां विचों एक है समाज विच इस्त्री दा स्थान। उस वल देखदिआं उहनृ साडे देस विच इस्त्री वल समूचे रवड़ीऐ बारे, ख़ासकर के भरून हत्या जिहे वहशी व्रतारे बारे बेहद रोस है। हर सूझवान मनुख वांग उहदे लई मुँडे अते कुड़ी दा फ़र्क़ कोई अर्थ नहीं रखदा। सगों धीयां वध क़दर योग हन:

पुतर जे ऑन घरां दी नी धीआं ईमान गरां दी नी किउं हत्या फ़ेर भरूना दी धिरग असा विवहार कूड़े (धीयाँ) उह किहड़ा कँम है जो पुतर कर सकदा है, पर धीआं नहीं: माँ पिउ दी सेवा तों ले के भरन पुलाड़ उडाना मरदां नाल बराबर मोढा हर थां हथ वटावे (आनंद कारज)

आदि काल तों मन्ख जाती दी सभ तों वडी समॅसिआ आरथिक वसीलियां दी काणी वँड रही है। समाजिक माद्दी बनतर कोई वी आई, इह काणी वँड जिउं दी त्यों रही। एक पासे दी अमीरी दे वाधे नाल दूजे पासे दी ग़रीबी वधदी ही रही है। टिबा जिना उचा होवेगा,लाज़िमी है कि टोआ ऊना ही डूँघा होवेगा।

अपनी सॅमुची रचना विच पशोरा सिंघ ढिलों लालोआं अते भागोआं दी धड़े वँड विच पकी तरां लालोआं दे नाल खलोता है। उह उहनां दी सुख विह्नी ज़िंदगी नू महसूस ही नहीं करदा, उहदे कारण वी भली भांत समझदा है। उहनृ मनृख दी निघरी हालत दा झोरा है, पर उह हँभला मार के ऐस हालत विचों निकल सकन दी उहदी समर्था दा पका विश्वासी है। आशावाद उहदीयां कवितावां विच फुल दी रंगत अते ख़ुशबू वांग रचिआ विसेआ होइआ है।

उह अपनी पुसतक दे शुरू विच कीती गई दुआ राहीं ही अपना अक़ीदा ज़ाहिर कर देंदा है: मेरे एहसास नू किरदार नू उह निम्नता देवीं मैं तेरे लालोआं दा थह पता ही भुल ना जावां (दुआ)

उह इह वी वाज़िह कर देंदा है कि उहदे गीतां दे नैणां विच वी बिर्रंह दी रड़क तां पैंदी है, पर उह कुझ होर कवीआं वांग बेबस हो के चौराहे विच

बैठ के रोंदा नहीं:

गीतकार हाँ मैं ज़िंदगी दे गीत लिखदा हाँ... मेरे गीतां दिआं नैणां 'च बिरहों रड़क वी पैंदी कदे पर बेबसी मेरी चौराहे रोण नहीं बहिंदी (गीत लिखदा हाँ)

समाजिक अहरां वांग कवी साहितक मरज़ां बारे वी जागृत है। ऐसे कर के उह मानां सनमानां अते कुरसीआं दी लेखकी लालसा तों मुकत रहि के अपना साहितक कारज कर सिकआ अते साहितक फ़र्ज़ निभा सिकआ है:

क़लमां दे इह धनँतर गालां देवी धनी नें दिल 'चों द्वैत उठ के ज़्बान तीक पहूँची पगड़ी दी ख़ैरसॅला, कुरसी ना जाऐ ॲला सन्मान दी लड़ाई अपमान तीक पहुंची (अदबी ख़ानाजंगी)

ऐस स्वार्थ अते आपा धापी दे माहौल विच उहदा मत है: लोड़ है अज सोचदे इनसान दी लोड़ है अज वक़्त दी पहिचान दी

पर लोड़ींदे निरसवारथ अते निष्काम इनसान दी थां अज दा इनसान हो किहो जिहा गिआ है:

जिस टाहणी ते बैठे, कटदे जांदे हां दाईए पुशतां लमे लाई फ़िर्दे हां तौक गलां चों लाह्न दी सोझी कौन दवे कैंठे वांगृ भार उठाई फ़िर्दे हां (चॅकी)

ऐसे कारण इनसान भविख मुख होण दी थां पिछल-खूरी सफ़र उते तुरिया होइआ है:

चढ़दी सदी तों झिजकदा मुड़ सोलवीं विच वड़ रिहै एक पैर अगे पुटदा दो क़दम पिछे धर रिहै (डाइनो सार दा कूच)

अते उस नू चौरस्ते उते पृज के ठीक राह दी पछान नहीं रहिंदी: चौरस्ते तों ही एक रस्ता सी रंग ते रौशनी वाला दसदै मील पथर तां चढ़े हाँ होर ही सड़के (असीं पाहरू बने)

इहनां सभ कुराहिआं दा ही नतीजा है कि मनुख अते मनुख विचकार

आर्थिक पाड़ा, जो मानव जाती दे निघार दा मुख कारण है, होर वधदा जांदा है। कवी नू ग़रीबी दे टोए होर डूँघे हो गए दिसदे हन अते ऐस व्रतारे दे कारण वी स्पष्ट दिखाई दिंदे हन।

टोए ग़रीबी दे ह्ंदे ना डूँघे जे महिलां ते वाधू मुनारा ना हुंदा (तेरी दीद)

माली पाड़े दी एक सिहज उपज साधन मालिक लोकां दी हाबड़ ह्ंदी है। उहनां दी लालसा अपनीआं रीझां दी पूरती, रज रज पूरती तों बह्त अगे वध के वाधृ मुनारे उसारन उते जा पूजदी है। वाधृ मुनारियां दी उसारी पाटे होए समाज विच ही मुम्किन है जिस कर के धरमां, नसलां अते जातां दे पाड़े पाए जांदे हन। ते इह वी इहनां वाधू मुनारियां दी उसारी दी दौड़ ही है जो पानीयाँ दी बूँद बूँद विच ज़िहर घोलदी है अते हआ नू रोगी बनाउंदी है। ऐसे कर के मनृख दी ऐस अणमनृखता दा शिकार होई धरती, अंबर दी शहज़ादी कोल, ह्ण धृत भगोड़ा आदमी जिस दा दर मलण लई उतावला होइआ पिआ है, फर्याद करदी है:

मेरा चूँड कलेजा खा गई इहदे धर्म, नसल ते जात मेरे सागर ज़हरां दबीआं

मेरे ज़ख़मी कुल दरिआ मेरे लूं लूं भरिआ ज़हिर नी हो रोगी गई हवा (सुन अंबर शहज़ादीई)

कवी दीओं नज़रां साहमने धर्म ईमान दी लड़ाई वी बेईमानी दे पिड़ विच लड़ी जा रही है। बंदा मंज़िल दी प्राप्ती दी लालसा विच उस तक पह्ँचन दे साधनां दी जाइज़ता नाजाइज़ता नू अखों ओलहे कर रिहा है। पर बंदे दी मूल मानवी भावना विच कवी दा भरोसा पका है।

धर्म, ईमान लई लड़दा वी बेईमान है बंदा आवे निम्नता अंदर नहीं इस दा बदल वी कोई तली ते सीस रख करदा जदों बलीदान है बंदा (तली ते सीस)

बंदे दी मूल मानवी भावना विच भरोसे जिना ही पका भरोसा उस दा ऐस क़ुदरती नियम विच है कि प्रगति दे पहीए नू रोकना नामुमकिन है अते ओह ऐस पहीए दे अगेरे वल गेड़े नू गज़ां तों फड़ के होर तेज़ करण लई उतावला है:

जो पहीया रोकदे नें समें दा बांहवां तुड़ा बहिंदे असीं तां दियांगे गेड़ा

अगेरे गज़ां तों फड़ के (असीं पाहरू बणे)

उह इनसान नू पिछे रह गई पस्ती दा पछतावा करन दी थां हिमत नाल उठन वास्ते तेज़ क़दमीं बुलंदी वल वधन दा सवैमान महिसूस करन लई वँगारदा है:

गिर गया सैं किस तरां हुण उस दा ना वहिम कर उठिआ हैं जिस तरां इह बात ही एक बात है (चढ़न हारा दिन)

जदों विकास मुखी मनुख इॅक़्ले कारे दी थां समूह बण के अगे वदणगे तां:

रुख इकला वेख जो बिजली फूक गई नवीं करृंनबल निकलेगी मुस्काएगी (कला कुदरत)

नवीआं करृंबलां दे निकलन अते मुसकराउन दी रुत विच कवी दी रीझ है कि किसे दे भागीं कंडे अते किसे दे भागीं फुल दी थां फुल ही हर किसे दी झोली विच पैण:

अैने फ़ुल उगा कि उह वी पहिन सके पोटे घस गए जीहदे गुंद गुंद हारां नू (अैने फुल उगा)

पशोरा सिंघ ढिंलें दी कविता दी लोक म्खता, अजोके मस्लिआं मामिल्यां न् म्ख़ातिब होण दी उहदी सोच अते अपनी ऐस विचार धारा उते अडोलता, अडिगता नाल चलदिआं कला ते कविता नू परम्खता देण दी उहदी समझ ते ज़ोर देण दी मैनू कोई लोड़ महसूस नहीं हँदी। कवितावां आप ऐस गल दी गवाही देंदीयां हन। तां वी दो गलां अजेहीआं हन जो पशोरा सिंघ ढिंलें दी कविता बारे कहिणीआं बणदीआं हन। एक है, सवै दे सरोकारां अते समाज दे सरोकारां विचकार तवाज़्न रख सकणा। जदों कवी स्वीकार करदा है कि नैणां विच रड़क तां उहदे गीतां देवी पैंदी है, पर उह ऐस रड़क न् चौराहे विच बेबस बैठ के रोण दा पज नहीं बनाउंदा , ओहदा मक़सद सवै दे सरोकारां नू उचित सीमां विच रखण तों है। जदों उह अपने गीतां विच इनसान लई अरदास करदा है अते हक़ इनसाफ़ लई आखण स्णन दी आस बनाउंदा है, ओहदा मक़सद समाज दे सरोकारां नू उचित महतव देण तों है। मन्ख स्चेत जीव है जिस कर के उहदे सवै न् छ्टिया के नहीं वेखिआ जाना चाहीदा अते मन्ख समाजिक जीव है जिस कर के उहदी समाजिक ज़िमेवारी नू वी घटा के नहीं वेखिआ जा सकदा। दोवां पखां दा संतुलन ही साहितक रचना नू मुलवान बनाओंदा है।

दूजी है, रहितलां दा अंतर अमल अते एक दूजे नू मुतासिर करन दी

ताक़त। पशोरा सिंघ ढिंलें वर्गे परदेसीं वसे पंजाबी दो सकाफ़तां दे संगम उते वसदे विचरदे हन। मेरा निजी तजुर्बा है कि बहतीआं सूरतां विच प्रवासी लोक देस दे लोकां ते देस दीयां समसिआवां तों भज गए होण दी दोष भावना अते कथित आधुनिक बगाने सभ्याचार साहमने हीनभावना महसूसदे रहिंदे हन। उह सिभआचारां दे चंगे मंदे पखां दा गंभीर नितारा नहीं कर सकदे। पशोरा सिंघ ढिंलें जाणदा है कि ऐस सभ्याचारिक अंतर प्रभाव नू रोकना मुछिकल है, पर उह नाल ही इह वी जाणदा है कि किस सभ्याचार विचों की कुझ सांभण वाला है अते की कुझ तिआगनवाला है। किसे वी साहितकार लई ऐस सभ्याचारिक समझ दा महत्व सवै उजागर है।

में साहि तक विहढ़े विच पशोरा सिंघ ढिंलें दे पहिले शाइरी प्रागे दी आमद दा निघा स्वागत करदा हाँ अते ऐसे सेध विच उसतों उहदीआं अगलीआं रचनावां दी कामना करदा हाँ।

> गुरबचन सिंघ भुल्लॅर दिल्ली।जनवरी, 2007।

पशौरा सिंघ ढिल्लों

मेरी कविता दी कहानी

हर कहानी पिछे कोई कविता होवे जां ना, पर मेरी जाचे हर कविता पिछे कोई कहानी ज़रूर ह्ंदी है। उंज मैं उस लिखारी नाल पूरी तरां सहिमत हाँ जो इस मत दा धारनी है कि रचना करन पिछों लेखक दा उहदे बारे कुझ बोलना फ़ज़ूल हंदा है, रचना आप ही मूहों बोल रही हंदी है।

असलीयत इह वी है कि कोई ना कोई पॅख़ ऐस तरां दा ज़रूर हूँदा है जो कविता दी पहुंच तों बाहर रिह जांदा है। उस पख़ दी शमुलगी दिलचस्प वी हो सकदी है। मैं उस ख़ास पॅख़ बारे सोचन लगा जो मेरी रचना तों आखिआ ना गिआ होवे। इस किताब दी शाहमुखी अते देवनागरी ऐडीशनज़ दा जन्म वी उसे पॅख़ दा ही हिसा है।

मैनृ मेरी कविता दे दिलचस्प होन दा एहसास मेरे ऐस सफ़र दे आग़ाज़ वेले ही एक बड़े ख़ूबसूरत अते नाटकी ढंग नाल हो गिआ सी। 7 अप्रैल 1968 न् चंडीगढ़ दे "रोज़ गार्डनज़" विखे पहिला, रोज़ फ़ैस्टीवल, मनाइआ गिआ सी, जो अज कल क़ौमी पधर उते मनाया जाण लगा है। इस पलेठी दे रोज़ फ़ैस्टीवल, विच मेरी पलेठी दी कविता 'रूह मेरे पंजाब दी' न् जिस तरहां उचेचा सन्मान मिलिआ सी, उह आपने आप विच एक दिलचस्प कहानी है।

चढ़दे पंजाब दी ख़ूबसूरत अते नवीं निकोर राजधानी चंडीगढ़ दी शुरुआत

लग भग 1952 विच किसे अलोकार कुड़ी दे जन्म वांग होई सी। 1947 दी वँड दीआं दुखदाई यादां हण कुझ मठीआं पै के पिछे रह गईआं सन ते दोफाड़ हए दोहां पंजाबां लई नवीआं अते ढ्कवीआं राजधानीआं दी भाल अते सिर्जना उहनीं दिनीं दोहीं पासीं अनोखीआं इनसानी घालनावां विचों सन। दुनीआं दीआं होर राजधानीआं पहिलां मंडीआं, फिर छोटे कसबे, वडे कसबे, वडे शहिर अते फिर बणदीआं बणदीआं राजधानीआं बनीआं सन। उहनां विचों कुझ कू दे पिछोकड़ नाल तां डुंघे इनसानी एहसास अते पीड़ां दीयां यादां जुड़ीआं होईआं सन। जिवें पूरबी अफ़्रीक़ा विच तनज़ानीआं दी राजधानी दार-ए-सलाम, पछमी अफ़्रीक़ा विच नाईजीरिआ दी राजधानी लागोस, जो अजिहीआं इतिहासिक वडीआं बंदरगाहाँ सन जिथों अफ़्रीक़ा दे निवासीआं न् जानवरां वांग शिकार करके अते बन् के गुलाम बनाण लई यूरपी जहाज़ां विच लद लिया जांदा सी। दार-ए-सलाम दे नाल ही एक "बागा मोया" नां दी बंदरगाह है जिथों इह जहाज़ खास तौर उते लदे जांदे रहे सन। सोहीली बागा मोया दे पंजाबी विच अर्थ, 'मेरा दिल इसे मिट्टी हेठ धड़कदा रहेगा' बणदे हन'। इह उहनां क़िस्मत दे मारिआं दी आपनी उस धरती माँ नू आख़िरी अल-विदा हूँदी सी जो इनसानी तारीख़ दा उह काला धब्बा है जो रहितल दे किसे विकास ने धो नहीं सकना।

अजोके समें विच अफ़्रीक़ा दे डहनां दोहां देछां दीआं आज़ाद सरउकारां ने वी चंडीगढ़ अते ईस्लामाबाद वांग नवीआं राजधानीआं क्रमवार डडोमा अते अबूजा सिरजीआं सन। पर उह बह्त बाद दीआं गॅलां हन। संयुकत राष्ट्र दे माहिरां दी देख रेख हेठ सिरजीआं गईआं इहनां दोहां राजधानीआं विच

मैन् बतौर लैंडस्केप आर्कीटैक्ट योगदान पाउण दा सुभाग मिलिआ सी। पर इह एक वख़री दास्तान है जो इस लिखित दे कलावे विच नहीं आउंदी।

1968 दा साल अन्ठी राजधानी चंडीगढ़ दी 16 वीं वरे गंढ दा साल सी जो मेरे अंदर पनप रहे शाइर लई उस अलोकार कुड़ी वांग सी जो हण म्टिआर हो गई होवे। मैं इस म्टिआर दे भखदे जोबन नू चितवदिआं उस दे क्दरती हार शिंगार दा ब्यान आपनी कविता "रूह मेरे पंजाब दी" विच कीता। मैं उस रोज़ फ़ैस्टीवल विच आपनी इह कविता बड़े जज़बे अते तरन्म नाल गा के स्ना रिहा सी कि अचानक प्रधानगी दी क्रसी तों ख़ास शख़्स उठे अते हउनां दे मान सत्कार लई उचेचे तौर उते ग्ंदिआ सजरे ख़्शबूदार फ़्लां दा दोहरा हार हउनां ने आपने गल विचों उतार के मेरे गले 'च आ पाया। रोज़ गार्डनज़ दा खुला मैदान ताड़ीआं नाल गूंज उठिआ। एक अनजाने शाइर नृ सतिकारन वाले उह विअकती विशेष केवल डाक्टर महिन्द्र सिंघ रंधावा ही हो सकदे सन। उस वेले उह नवीं राजधानी दे पहिले चीफ़ कमिशनर सन। रंधावा साहिब विलक्खन बनसपति वग्यानी होन दे नाते फुलां ते ख़ुशबोआं दे कद्रदान तां है ही सन, उहनां दा पंजाबी साहित अते कला लई मोह अते योगदान वी बेमिसाल है। मेरी उस कविता दे बोल क्झ ऐस तरां सनः हण हो गई म्टिआर डह अज चढी प्रवान

इहनृ चुनी दवे हिमालीआ हथ सिर 'ते रॅखे आन इहदे नैण कटोरे झील दे उडदे पंछी फाहन इहदी जुलफ दी छावें खेडदे मेरे सैकटरीइट विधान...

इस पिछों मेरा इह अन्भव पका हो गिआ कि जिवें मैं लैंडस्केप आर्कीटैक्ट वजों फुलां, बूटियां, रँगां, ख़ृशब्वां, पथरां अते पानीआं दे तिलसम न् समझिदआं लैंडस्केप डीज़ाईन बनाउण लग पिया हाँ, उसे प्रकार में शबदां न् प्रो संवार के किवता दा हार अते गुलदसता गुंद सकदा हाँ। इह वख़री गल सी कि लैंडस्केप लई उचेरी विदिआ मैं विधि-वत रूप विच लैंडस्केप इंस्टीच्यूट लंडन तों लै रिहा सी अते किवता में रचिदआं रचिदआं ही सिख़नी सी। इहनां हारां अते गुलदसितयां विच ख़ुशब्दार ते सुचे फुल हन जां निरे काग़ज़, इह तां पारखू पाठक ही दसनगे। मेरा कॅम तां इस किताब दी पेशकारी तक महिदूद है जो सोहिरद अते नेडले मितरां दे उतशाह अते वडमुले सुझावां सदक़ा मुम्किन हो सिकया।

एक गल होर! 1967 विच इंगलैंड जान तों पहिलां मैं हरदयाल सिंघ जौहल जो चंडीगढ़ दे पहिले लैंडस्केप अफ़्सर बने ते बाद विच बतौर स्परिनटैंडिंग इनजीनीअर (लैंडस्केप) सेवा मुकत ह्ई, दी देख रेख हेठ चार पंज साल, पहिलां म्गल गार्डनज़ पिंजौर अते फिर कैपीटल प्रोजैक्ट चंडीगढ़ विच कॅम कर चुका सां। जौहल साहिब नृ में लैंडस्केपिंग लई

रस्मी तौर उते गुरू तां नहीं सी धारिआ पर मैं उहनां कोलों इस बारे सिख़िआ बह्त कुझ। ऐसे चेटक अते उहनां दी प्रेरणा सदका ही मैं लैंडस्केप इंस्टीच्यूट लंडन दे राहे पिआ जिस्दे प्रोफ़ैशनल असोसीऐट मैंबर वजों मैन् इंगलैंड, तनज़ानीआं, नाईजीरिया, दुबई अते अमरीका लग भग अधी दुनीआं दे देसां विच योगदान पाउन दा अवसर मिल सिकआ।

ऐनिआं देसां दे रटन पिछों बेशक ह्ण मैं कैलेफोरनीआं नु आपना घर बना लिया है पर हर देस दे झरोखे विचों मैं हमेशा आपनी जन्म भौं पंजाब वल तकदा रिहा हाँ। ऐस तरहां मेरी पंजाबी बोली, पंजाबी कविता अते पंजाबीयत नु विशाल मनुख़ता नु कलावे विच लैण दा सुभाग प्राप्त रिहा है जो मेरे लई वी ते मेरी पत्नी इंद्रबीर, बेटी नवरीत अते बेटे नवदीप लई वी बड़े माण वाली गल रही है। पंजाबीअत तों मेरा भाव हर उस बशर तों है जो हर मंद भागी राजनीतिक रेखा दे आर पार, सभ्यता दे पंघूड़े उस सांझे पंजाब दे भुगोलिक ख़िते विच वसदा है ते जां संसार विच जिथे वी वसदा है आपणीआं जढ़ां दा तअलुक उस ख़िते नाल जोड़ सकदा है।

पंजाबीआं दा इह विरसा जिडा मान मता है, शायद ही किसे होर ख़ित्ते दे लोकां दे नसीब विच होवे। इह हउ धरती है जिथे पंज हज़ार साल तों वी पहिलां मन्ख़ ने पशू पालने अते सभ तों पहिलां ज़मीन नृ हल नाल वाह्ण, खेती बाड़ी करन ते पिंडां क्सबियां विच रहिण दा वल सिख़ना दिसया जांदा है। भ्रिशट राजनीतिक अते मौसमी करोपीआं दे बावजूद अज पंज हज़ार साल बाद वी पंजाब वर्गा किसान दुनीआं दे किसे होर तख़्ते

ते लिभयां नहीं मिलदा। पंजाबीअत सबँधी मेरी इह भावना किनी कृ सँची सी एस दा प्रमाण वी ऐस गॅल'च ही ए कि इस किताब दीआं हथलीआं छाहमृख़ी ते देवनागरी ऐडीशनज़ दा आग़ाज़ वी वाहगियों पार लिहंदे पंजाब दे वीरां दी प्रबल इच्छा अते प्रेम सदक़ा ही होइआ सी।

इह किताब आरसी पब्लिशरज़ चांदनी चौक दिली वलों ग्रम्खी लिपी विच पहिली वार 2007 विच छपी सी।जिस विचों कुझ कवितावां मैं अपनी वेबसाईट ते लिखती अते, आवाज़ ते परवाज़, नां दी, सी डी, बना के पा दितीं अं सन जिनां नू पंजाबी पाठकां ते सरोति आं वलों भरवां हँगारा मिलिआ सी। बेटे नवदीप दी मदद नाल कुझ नज़मां जिवें धीआं, पॅग दी सांझ, उही है इह सितारा अते अंबर दी शहज़ादी दे नां, दे मूविंग सिलाईड शोअ बना के यू टयूब ते जदों पाईआं गईआं तां वडी गिनती विच पंजाबी प्यारिआं ने उनां दा आनँद मान्या। पंजाब तों दूर परदेसां विच पल रही नवीं पीढ़ी जो ठेठ पंजाबी समझन तों थोड़ा आरी है, उहनां दी बेनती, ते अंग्रेज़ी विच सब-टाईटल वी शामिल कर दिते गए सन। यू टयूब तों सुण के ही सूफ़ी गाइकी दी उभर रही सितारा डाक्टर ममता जोशी ने कैनेडा अक्तूबर 2010 विच होण वालीआं आपनीआं कनस्रटस विच,अंबर दी शहज़ादी, वाली नज़म शामिल करन लई मैनू बेनती कीती सी ते वैंनक्वर विच होण वाले आपने पलेठी दे प्रोग्राम विच मैनु बीवी समेत शामिल होण लई उचेचा सदा दिता सी।

इंटरनैट तों इस किताब दे गृरमुखी लिपी विच छपी होण दे वेरवियां नू लै

के अनेकां फ़ोन अते ई मेल इस न् शाह म्खी अते हिंदी विच छापन वास्ते वो मिलदे रहे। अंत विच "माँ बोली रिसर्च सैंटर लाहौर वालिआं वीरां दी नज़र पैण 'ते उहनां दी प्रेरणा अते योगदान वरदान बन गया, जदों मुहम्द आसिफ़ रज़ा होरां दी मिहर अते प्यार सदक़ा इसदी कम्पोज़ीशन दा बीड़ा चुक लैण लई उहनां वलों इजाज़त मंगी गई सी। इस सहमती अते इह राबिता क़ाइम होण उपरँत रज़ा साहिब होर वी ख़्श हुए जदों मैं उहनां न् आपनी जन्म भौं वाले जद्दी पिंड सय्यद वारिस शाह होरां दे सरनावीएं पिंड जंडिआले बारे दिसआ सी। मेरा जन्म जुलाई, 1 939 नृ भसीन ढिलवां दे नज़दीक छोटे जिहे पिंड जंडियाला विच होइआ सी जो वाहगियों पार शहिर लाहौर वाले पासे सी।इस पिछों जिस हलास नाल गल अगे वधी उस बारे सोचिदआं जां ब्यान करदिआं मेरा बार बार गच भर जांदा है। मेरे जंडियाले पिंड दा ज़िक्र छिड़िआ ही सी अते इस बारे में इस प्रागे दी शाह म्खी ऐडीशन दे म्ख बंद विच क्झ लिखन दी सोच ही रिहा सां कि अचानक 5 मार्च 2011 पहिर दे तड़के चार वज के तीह मिनटां ते, सिरहाने पए टेलीफ़ोन दी घंटी खड़की। चुकिआ तां अगों मुहम्द आसिफ़ रज़ा साहिब बोल रहे सन "सलामा अलैकुम पशोरा जी में आसिफ़ तुहाडे जदी पिंड जंडियाला तों बोल रिहा जे। मैं त्हाडे बज़्रगां दा एक घर वी लभ लिया जे। वेख लउ इह 70,80 साल बाद अजे सही सलामत खलोता होइआ जे। बेशक इस दा आला दिवाला सभ ढाह ढवाह के नवां उसारिआ दसिया जांदा है। असीं इस दे अैन साहमने ख़लोते होए तसवीरां उतार रहे हाँ। आह लओ करो गल आपने बज़ुरगां दे कुझ भाई बंदां नाल, जिहड़े

मैनृ इस घर दे कोल लै के आए नें"। "मैं जी मराज दीन हाँ, सलामा लेकम! पर मैनृ उह माझा ही आंहदे हंदे सन। तृहाडे परिवार दे गभरृ मुँडियां विच मोहना, मखन, दूला ते प्रीतृ ह्रीं हँदे सन। ग्यानों ते सॅतो कुड़ीआं। होर वी नां याद आ जासन, ख़्याल विच घुम रहे नें। इसीं इस वक्त तृहाडे बज़्रगां वाले घर दे कोल ही ख़लोते होए हाँ। तृहाडे नाल गल करके जी नू बड़ा चंगा लग रिहा ऐ। फ़ज़लदीन जो तृहाडे परिवार नू वंड पिछों भखने पिंड वी दो वार मिल के आया सी गुज़र गिया जे। उहदा मुंडा बशीरा वी फ़ौत हो गया सी । आह उहदा सारियां तों छोटा मृँडा वी तुहाडे नाल गल करनी चाहंदा जे"।

चाचा मराज दीन छेती छेती बोल रिहा सी जिवें ख़ंदशा होवे कि गल बात वाला इह राबिता ह्णे टुटा कि टुटा। मैं इह सभ क्झ भोवँतरिआं वांग सुण रिहा सां। यक़ीन नहीं सी आ रिहा कि इह सच है जां तड़कसारी सुपना। पिंड बारे गल तां हाली एक दो दिन पहिलां ही होई सी जदों उहनां उस दी निशान देही बारे पुछिआ सी। आसिफ़ होरां एडी छेती इह निका जिहा पिंड जो लाहौरों 40-50 मील दूर होवेगा किवें लभ लिया होवेगा ते फिर शहिर तों पिंड एडी छेती अपड़न लई इह ज़िहमत। इस तों पिहलां कि टैलीफ़ोन दूसरे कोल चिलआ जांदा मैं जलदी विच इही किह सिकआ: "चाचा जी सलाम! मैं तुहाडे मख़न दा ही मुँडा हाँ। ते तुहाडा मोहना मेरा चाचा अते दूला मेरे ताया जी नें।

"अला हाफ़िज़ उहनां आखिआ! होर सुख सांद पुछदिआं फ़ोन अगे तों अगेरे फ़ड़ाउंदे गइ। बेशक मैं उस वक़्त उथे हाज़िर नहीं सां, पर फिर मैं होर किथे

सां? इस तरहां दी मन्ख़ी संवेदनां नृ कोई करे ते किवें ब्यान करे ! इही कहांगा कि जिनहां ने नहआं नालों मास वख़रे कर दिते उहनां दावी भला अते ऐस तरहां दे उपराले करदिआं मलहमां लाउंदे फिरन लई वचनबध ते यतन शील "माँ बोली रिसर्च सैंटर" वरगिआं इदारिआं अते उहनां नु चलाउन वाले मुहमद आसिफ़ रज़ा जी वर्गीयाँ रुहां दा वी भला! इथे इह दसना वी क्थां नहीं होवेगा कि कवितावां लिखन लगन तों पहिलां होर कवीआं दीआं दिल न् छोहन मोहन वालीयां कवितावां तरन्म नाल गौण दा शौक़ मैन् घर अते स्कूल दोहां दे माहौल तों पै गिआ होइआ सी ।इस माहौल दी आपने आप विच एक होर दिलचस्प कहानी है। पाकिस्तान बणन वेले मेरे दादा जी सरदार जीउन सिंह अते उहनां दे छोटे भरा सूबेदार हज़ारा सिंह दा परिवार ज़िला लाहौर दे उस उपर दसे निके जिहे पिंड जंडिआला विचों उजड़ के एक हनेरी रात आपने क़रीबी रिश्तेदार देशभगत बाबा सोहन सिंघ जी भखना दे खेतां विचले घर, जिस नृ पिंडों बाहर वार होण करके हण लोक बाबे दा डेरा ही आखदे सन , आ पहंचा सी। मेरे दादा जी दा उह पिंड वाहगिओं पार उनां क़ ही लाहौर वाले पासे रह गिआ सी जिनां क़ भखना इधर अमृतसर वाले पासे है। दादा जी दी वडी भैण माता जी बिशन कौर बाबा सोहन सिंघ भखना जी दी जीवन साथन सन।

उजड़ के औण नालों वडा दुखांत मेरे दादा जी लई एक होर वी सी। लग भग सारी जवानी जदों बाबा जी आज़ादी दे संग्राम विच बेघर, बेवतन, मौत नाल लुकन मीट्टी खेडदे रहे सन, तद् आपनी भैण दा रुजड़न रुजड़न

करदा घर उस दे भरावां ने समें समें वाहगा पारों भखने पहँच के वसदा रखिआ सी। इह समें दा केहा गेड़ सी कि ख़ाली हथ उजड़ के आए भरावां नु अज उसे भैण दे घर आसरा मिलना सी। भैण कि़डे वडे जेरे ते जभे वाली सी, इह तां बड़ी देर पहिलां ही उह साबित कर चुकी सी, जदों आपने सिर दे साईं दा राह, जो चिरोकना देस दी आज़ादी दे राह विच रल चुका सी, उड़ीकदिआं उड़ीकदिआं उस ने सारी जवानी किसे शिकवे शकाएत तों बिनां इकलापे विच कट लई सी।

माता जी बिशन कौर नृ असीं वी आपने माता पिता दी रीस वडे भूआ जी ही आखदे सी।जदों वी बाबा जी नृ कोई मिलन आउंदा ते उहनां दे गोडे छोहन लई अहलदा तां उह निम्नता नाल पिछे हट जांदे अते ज़रा हटवें बैठे साडे वडे भूवा जी वल इशारा करदिआं थोड़ा मुसकरा के आखदे, "भिलया, गोडियां नृ हथ लाउणा ए तां उस दिआं नृ ला, जिन्हे मेरी उमरां जिनी लमी गैरमौजूदगी विच मेरा इह घर मैन् उडीकदिआं वसदा रखिआ जिधे मैन् अख़ीर आ के पनाह मिल सकी है। मेरे तों किते वडी देशभगत है उह बिशन कौर। मैन् याद है कि उह उहनां नृ बिशन कौरे जी आख के ही वाज मारिआ करदे सन।

पैर कुझ सँभले तां मेरे दादा परिवार देवाही करन वाले बंदे अते सँद तां यूपी वाले फ़ार्म ते चले गए अते स्कूल जान वाले बँचे भखने अते बाद विच चंडीगढ़ ही टिके रहे। ऐसतरां दसवीं जमात मैं बाबा जी दे आपनी ज़मीन विच हथीं बनाए जनता हाई स्कूल भखना तों 1956 विच पास कर

के ख़ालसा कालिज अमरितसर बी. एस. सी. अग्रीकल्चर विच दाख़िल हो गया सी।

इनकलाबीआं ते ख़ासकर गदरीआं नू आम तौर उते सूरबीरता अते चट्टानी इरादिआं वाले लोह-पुरशां वजों ही जाणिआं जांदा है। जँता दे भले लई लड़ाईआं लड़दे उह लोह-पुरश अैने कोमल भावी ते साहित कला दे पारखी होणगे, इह गॅल अख़बारां विच जां मुलाक़ाती जीवनीआं विच घट ही उभ्रर के साहमने आई है।मिसाल वजों बाबा जी नृ जिना आप पढ़न दा शौक़ सी, उस तों वधेरे बचिआं नृ पढ़दे वेखन दा शौक़ सी।उहनां लई शौक़ दा दूजा नां ही शाइद फर्ज़ सी जिस करके उहनां ने तालीम खुनों बह्त ही पछड़े होए सरहदी इलाक़े विच पहिलां सिर्फ कुड़ीआं लई अते बाद विच कुड़ीआं ते मूँडिआं लई सांझा जनता हाई स्कूल भखना आपने खेतां दी ज़मीन विच ही खोल दिता सी।अंग्रेज़ दे टोडीयां दी रहिंद खूंहद वलों दोहां गॅलां, मतलब कुड़ीआं दी पढ़ाई अते हाईस्कूल तों पहिलां जनता शब्द जोड़े जान, दी मुख़ालिफ़त कीती गई सी जो छेती ही आपनी मौत आप ही मर गई सी। इँज स्कूल दिन दुगुनी ते रात चोगुनी तर्की दे राह पै गया।

जनता हाई स्कूल भख़ना दे पहिले काबिले ज़िक्र हैडमास्टर मशहूर कहानीकार सुजान सिंघ बणे अते सैकँड मास्टर सतनाम सिंघ पांधी जो काबिल उस्ताद होन देनाल नालआपनी क़िसम दे चंगे लेखक वी सन। सुजान सिंघ तों मगरों उह हैडमास्टर वी बणे सन। उहनां दोहां देनाल होर वी सोहिरद उस्ताद आ मिले जिनहां ने स्कूल नू बड़ी उसारू

सेध दिती। पढ़ाई अते खेडां दे नाल नाल हर सिनचरवार अधी छुटी मगरों अदबी प्रोग्राम पेश कीता जांदा जिस विच क्ड़ीआं, मुंडे अते उस्ताद बड़े उतशाह नाल शामिल हंदे। मैनु होरनां प्रेरणावां दे नाल नाल आपनी आवाज़ दे सुरीला अते सुरबध होण दा एहसास वी इसे माहौल दी देन ही किहा जा सकदा है।मैं हर उस हफ़तावारी प्रोग्राम दी उडीक क्रया करदा सी जदों किसे उस्ताद जां जमाती जमातिन वलों मैनु ज़रूर ही कुझ सुनाउन लई आख्या जांदा।

ढंड, कसेल अते होर द्राडे पिँडां तों वडीयाँ जमातां दीआं क्झ क्ड़ीआं वी साडे घर ही ठिहरदीआं सन। गर्मिआं दीआं रातां नृ वडे थड़े उते सारा परिवार मछरदानीआं ला के बाहर ही सुता हूँदा सी। स्कूल दा कँम, घर दीआं सवाणीआं दा कँम अते पठा दधा मृका के परिवार दे सारे जीआं वलों वडे थड़े उते रात नु अदबी दरबार लगदा जिस विच प्रीत लड़ी अते होर पतरां विचों कवितावां, चुटकले वगैरा याद कर के सुनाए जांदे सन।

ठीक समें उते इसीं सारे बाबा जी अते वडे भूवा जी दीआं मँजीआं दवाले, चौकीआं, पीढ़ीआं, क्रसीआं, वडे स्टूल अते लालटैनां रुख के बैठ जांदे सी। उची सुर वाली कविता हमेशा मैन पढ़न लई आख्या जांदा। रातां नु आसे पासे ख़ेतां नृ पानी लाउन वाले कई वेर दसदे कि रात नृ उहनां ने सान उच्ची उच्ची हसदियां अते मैन गाउंदियां स्णिआं सी।अंत नू पहिलां वडे भूवा जी अते फिर बाबा जी दे पहिले घुराड़े नू असीं अदबी दरबार दे ख़ातमे दा इशारा समझ के पीढ़ीआं, चौकीआं चुक् लैंदे अते आपो

आपनीयां मँजीयाँ दा राह फड़दे। ते इस तरहां इह घर अते उह स्कूल जिधे मृँडे कुड़ीआं इकठे विचरदे अते पढ़दे रहे, मेरे लई एक अनोखी प्रेरणा दा स्रोत बनी। ते फिर मैं कम दे सबँध विच किसे वी देस विच विचरिआ, अदबी तनज़ीमां जां अगांहवधू मितरां प्यारिआं, मर्द, इसतरीआं दी संगत विच उसे तरहां दे माहौल आपने आप ही सिरजे जांदे रहे सन। कैलीफ़ोरनीया दी इह वादी अजिहीआं गती-विधीआं दी रोशन मिसाल है।

पेशे मुतल्क रझेवियां अते परिवारिक ज़िमेवारीयां ने बेशक वेहल नहीं दिती, फिर वी जो महिस्सिआ, लिखन दी कोशिश करदा रिहां हाँ। पर होर होर लिखण नालों में जो लिखिआ, उस नृ वार वार साहित सभावां, मंदरां, गृरदवारियां, छोटीयां वडीयाँ महिफलां, मजलसां विच गा के सुनाउंदा रिहा हाँ। इंज मेरीआं लिखीआं गिनती दीआं कवितावां वी मैनृ बहतीआं लगदीयाँ रहीआं हन। किताब छपवान दी सोचन तों पहिलां मैन् लगदा सी कि इह कवितावां जदों छपनगीआं तां इह किताब वारिस शाह दी हीर जिनी मोटी हो जाणी है। पर इह सचाई तां नहीं सी।

रसालियां विच छपदे रहन करके पढ़न हारां लई मैं ईनां गुमनाम तां नहीं सी, पर किताब छपवान दे मोह तो निर्लेप ही रिहा सां। गल इह नहीं सी कि मैं इह कवितावां किताबी रूप विच छपवानीयां नहीं सी चाहंदा। डरदा एस गल तों सी कि कुझ प्रवासीआं वलों पैसिआं दे ज़ोर नाल 'अपुसतकां' छपवा लैण अते परकाशकां नू विगाड़ देण वरगीआं गॅलां इधर उधर सुणन

नृ मिल जांदीआं सन। इह गॅलां किथों तक ठीक सन, पता नहीं, पर मन अजीब दुचित्ती विच ज़रूर फ़सिआ रिहा।

2003 विच हरमन प्यारे लेखक कर्नल जसबीर भुलर आपनी पत्नी अमरिन्द्र भुलर नाल कैलीफोर्निआं आई। उह मेरे दोस्त वी हन अते नेड़े दे रिश्तेदार वी हन। उहनां नाल भरवीआं मिलनीआं अते विचारां होईआं। उहनां ने किताब छपवान लई मैनृ टोहिआ, परेरिआ अते खरड़ा तैयार करन लई कई वडमुले सुझाअ दिते। पर उहनां दे देस परत जान मगरों गल उथे दी उथे ही खड़ी रह गई।

सितंबर 2006 कहानीकार गुरबचन सिंघ भुलर आपनी पत्नी गुरचरन कौर नाल कैलीफोर्निआ, बे एरिया विच आपनी बेटी भावना कोल निजी फेरी लई आई। उहनां दी मर्ज़ी आपनी ख़ाहिश मुताबिक विचर के चुप चुपीते देस मुझ जान दी सी। पर ओहनां नु पढ़न अते प्यार करन वालियां दी मर्ज़ी कुझ होर सी। उहनां दे आउन दी ख़बर मूँहों मुँह फ़ैलण दी देर सी कि उहनां नू अदबी हलकिआं विच निकलना ही पिआ। मैनृ वी उहनां दे सन्मान विच रक्खे कुझ अदबी प्रोग्रामाँ विच शामिल होण दा अते उहनां नु सुणन दा सुभाग मिलिआ। आपना कीमती वक्त कढ के एक दिन उह परिवार समेत मेरे घर रोलिंग हिलज़, मडेरा आई। उहनां ने मेरीआं नज़मां सुनीआं ते मेरी किताब छपवान दी गॅल फिर उथों शुरू हो गई जित्थे जसबीर भुलर छड के गए सन। फ़र्क़ इस वार इह सी कि प्रेरणा दर प्रेरणा देन दी बजाऐ उहनां ने अंतिम हद तै कर दिती कि दसां दिनां दे अंदर हथ लिखिआ खरड़ा उहनां तक पहुँच जाना चाहीदा है। कलम कटार दे

धनी लेखक गुरबचन सिंघ भुलर अक़ल विच तां मैथों वडे हैंण ही, उम विच वी वडे हन। इस लई उहनां दी तै कीती समां सीमां मैनृ पालनी ही पई। ते इस तरां जे इह किताब पहिली वार 2007 विच गृरमुखी विच छप सकी तां इह गॅल पहिलां मेरी पत्नी इंद्रबीर, बेटी नवरीत, बेटे नवदीप, अनेकां दोस्तां मितरां, कई वार अजनबी सुणनहारां दे ते फेर जसबीर भुलर दी मुढली प्रेरणा सदका अते अख़ीर विच गुरबचन सिंघ भुलर दी तै कीती समां सीमां सदका ही हो सकी सी। ते जे इह शाहमुखी अते देवनागरी विच छप के ह्ण तुहाडे हधां विच है तां इह सारा सिहरा लिंदे पंजाब दे प्रेमीआं, माँ बोली रिसर्च सैंटर लाहौर दी कृपा अते खासतौर ते जनाब मुहम्द आसिफ़ रज़ा होरां दे सिर ही है, जिनहां दी प्रेरणा, मेहरबानी ते हिम्त सदक़ा इह मुम्किन हो सिकआ है जो आपने आप विच वी एक वख़री कहाणी है।

पशौरा सिंघ ढिल्लों मडेरा, कैलेफोरनीआं, अमरीका सतँबर, 2011

दुआ

मेरे साहिबा मैनृ तौफ़ीक़ इह देवीं, मैं तेरी बात समझां, बात विच्ली रम्ज़ नू जानां। तूं मेरे तोतले बोलां दा राखा ख़द बनीं, बख़श देवीं उह बोले बोल जो ना ठीक किह पावां। मेरे एहसास नू किरदार नू उह निम्नता देवीं, मैं तेरे लालोआं दा थह पता ई भुल ना जावां। कातिल बाज़्वां विच दर्द दिल विच ख़ौफ़ भर देवीं, दर्गाहाँ कदे ना बणन देवीं फिर क़तलगाहां। भला सरबँत दा मँगां ते इस दे नाल फिर, अपने बॅचिआं दी ख़ूबस्रत ज़िंदगी चाहवां। फिर जे हो सके ते धो दोईं लॅगी उह हर तोहमत, तेरे दरबार आख़िरकार जद मैं सदिआ जावां।

गीतकार हां मैं ज़िंदगी दे गीत लिखदा हां...

मेरे गीतां दिआं नैणां 'च बिरहों रड़क वी पैंदी। कदे पर बेबसी मेरी चौराहे रोण नहीं बहिंदी। मेरे गीतां 'च इस इनसान लई अरदास ह्ंदी ऐ। हक़ इनसाफ़ लई आखण सुणन दी आस हुंदी ऐ।

कवितावां अते गीत

की रखीएं नां इस आलम दा

की रखीएं नां इस आलम दा, इहनां दिल विच रिसदीआं यादां दा। साथों टुट गए कौल करारां दा, उहनां अण सुणीआं फरिआ दां दा। की रखीए नां . . .

निके जिहे पिंड मेरे लोकां नूँ, आसां सन वॅडीआं मेरे 'ते। मैं चानण लै के परतां गा, सजांगा ऑण बनेरे 'ते। पर तल्ख़ हवावां दे साहवें, ना चलिआ ज़ोर चिरागां दा। की रखीए नां. . .

इह ख़सलत रही हनेरे दी, कोई ज़्गन् इस नू भाउंदा नहीं। उह टिमकन बाझों रहिंदा नहीं, ते ने्रा चानण चाहुंदा नहीं।

इह झड़प नहीं कुझ रातां दी, इह घोल है आदि जुगादां दा। की रखीए नां. . .

इक असी रात दा आलम सी, मैं संग ज्गन्आं ट्रर आइआ। मां सेजल नेणीं तकदी रही, जूह पार लंघा पिउ मुड़ आइआ। उह मेरीआं मॅनतां मनदे रहे, खूद जींदे जींण अज़ाबां दा। की रखीए नां.

में हां ते कैसा दीपक हां, जो पार सम्द्रं बिलआ हां। लै चमक अमानत तुर आयां, सँग चँन चानिनी रिलआ हां। मेरे सिर तों कर्ज़ा नहीं लिहणा, मेरे पिंड दे जृन ख़राबां दा। की रखीए नां. . .

पींघां किथे पावां

पिपलां दे संग बोहड़ गवा लऐ, बोहड़ां दे संग छावां। टाहलीआं गईआं आऐ सफैदे, पींघां किथे पावां।

चुंझ विच तिनका लई परिंदा, उडिआ चार चुफ़रे। जूहां देसी बिरख दसौरी, किधर आलणा पावां।

पिछली राते चढ़ी हनेरी, कर गई तीला तीला। लुक छुप के कोई बची करृंबल, पत्र टावां टावां।

लगी लो ते की पिआ वेखां, बँद पऐ दरवाज़े। तख़्तपोष ते ख़ुलिआ ठेका, पिंड दी सथ विच ठाणा।

खूहां ते सी रब वसेंदा, उह वी रुसदा लगिआ। जॅट मर गए ख़ूदक्शीआं करदे, चमबड़ीआं वेख बलावां।

गुरुआं पीरां दी उह धरती, धाहां मार के रोएी। जिउं कोई लाड़ी सज-विआही, लुट लई आप कहारां।

सपनी सिर ते फूकां मारे, बोट आलॄणे सहिमे। उतर पहाड़ों आ वे जोगी, पुट वरमीं नूँ ढावां।

तली 'ते सीस

कल दी बात है, सी आदमी कुझ इस तरां डरदा। शेर आइआ बचाउ शोर डरदा आजड़ी करदा।

उसदा सँच सी जां श्गल सी इह तां उही जाणे, उसदे शोर 'ते सी पिंड सारा पैरवी करदा।

अजोके दौर विच तां आदमी नू शेर नहीं खांदा। शोहदा शेर तां पूछल दबा के दौड़ है जांदा।

पस्, पंछी, पँखेरू, आलॄणे इस तों तरहिंदे नें, खांदा है तां केवल आप नू हुण आदमी खांदा।

चुफ़ेरे पकड़ है इसदी विछाई जाल है बैठा। सागर झील नदीआं शुध हआ गंधाल है बैठा।

रॅब जे चढ़ गिआ अस्मान फिर वी उसदी शामत है। कोई स्वर्ग ते ना नरक हुण इस तों सलामत है।

विछाऐ जाल विच पर फस गिआ सभजाणदा बंदा। धर्म ईमान लई लड़दा वी बे-ईमान है बंदा।

आएिआ निम्नता अंदर नहीं इसदा बदल वी कोई, तली 'ते सीस रख करदा जदों बलीदान है बंदा!

समें दी डाची

(21वी सदी 2001न्ँ समर्पित)

आऐ सां बह्त दूरों कोह होर सौ मुकाइआ। चढ़दी सदी दवाले एक नूर नज़र आइआ।

मारृथली सिख़र तों मंज़िल दे कलस लिशके, उह रात सी गुलाबी भर जश्न सी मनाइआ।

जां तड़कसार होई, डाची समें दी उठी, भज तुरी पिछांह नृ डाची नृजद उठाइआ।

उह होर तेज़ नठी ते होर ज़ोर मस्ती, अगियों दी रोकना जद रल क़ाफ़िले नें चाहिआ।

डाची है बे-मुहारी ते कारवां परेशां, पिछे है बिखड़ा पैंडा, मर के मसां मुकाइआ।

होइआ जां पह् फुटाला ते बेनकाब चिहरे, आपणे ही महारथीआं डाची दा मूँह भंवाइआ।

डाची दा मूँह पिछांह नृँ चढ़दी सदी अगांह नूँ, अपने ही शाह सवारां कीता की हे ख़ुदाइआ!

असीं पाहरू बणे

नहीं सन्मान दी इच्छा चढ़े दिन म्ख़बरी कर के। असीं तां दिआंगे पहिरा रात हर मोड़ ते खड़के। असीं पाहरू बणे सां पिंड नू जद सनृ आ लगी, ऐसे दोष लई हर चोर दी हां अख् विच भला इस पिंड दा मंगदे जदों बंदे तिरे रुबा, उदों ही क़हिर टूट पैंदा किउं उचे कूट तों चढ़के। जे रुख ही ना रहे दस आलृने सिर ते बणउगे, उडिआ सदा नहीं जाणा इह तिनके च्ंज विच भर के। च्रसते तों ही एक रस्ता सी रंग 'ते रोशनी वाला, दसदा ऐ मील पॅथर तां चढ़े हां होर ही बणेगा क़ाफ़िले दा की जो आइआ दूर तों चल के, जे डाची समे दी कोई लै गिआ अज होर ही फड़ के। जो पहीआ रोकदे नें समें दा, बांहवां तुड़ा बहिंदे, असीं तां दिआंगे गेड़ा अगेरे गजां तों फड के।

पिआार दा गुणा - फल

ना ते जीत तेरी सजन, ना ही साडी हार पिआरे। इह सोच आ गऐ हां, फिर ऐस वार पिआरे। स्णिया निहथिआं ते, तलवार नहीं उठाउंदे । आपां सँभाल आऐ, अपनी कटार पिआरे। पहंचे तेरी गली 'ते, सिर धर लिआ तली 'ते। इह भ्रम ही रहे ना, बुज़दिल सां यार पिआरे। तेही किहा सी सजना,है इसतरां ही वधना। इह पिआर दा गुणा-फल,दो तों हो चार पिआरे। तेरी ही बन् के पले, निकले नहीं इकॅले। साडे जिहां दी आई, लँमी कतार पिआरे। हण वी निक़ाब रहिणा, मुखड़ा छुपा के बहिणा। नहीं हादिसा निगृणा, सोचीं वीचार पिआरे!

तेरी मेरी सांझ

तेरी मेरी सांझ रिश्ता वास्ता है इस तरां। धृत 'ते आकाश विचला राबता है जिस तरां। तेरी मेरी सांझ ...

अँबरां तों ट्रंट के धरती अचानक डिग पई, मैं बहिश्तों कॅढिआ हां कौण जाणे किस तरां।

पैंडिआं विच रात दिन लभदी गवाचे मूल नू, मैं हाँ आवागौन वर्गे चॅकरां विच जिस तरां।

तारियां दी भीड़ विच उह रोज़ गेड़े मारदी, मैं हाँ तैनृ ढ़ंडदा सभ चेहरिआं विच जिस तरां।

उस ते नें दैवी बँदशां मेरे 'ते सौ पाबंदीआं, मंज़िल-ए-मक़सूद देराही ना रुकदे इस तरां।

पास तों वेखां तां कोहां दूर, दूरों पास हैं, दिसहदे ते मेल दोहां दा अज़ल तों जिस तरां।

तेरी मेरी सांझ रिश्ता वास्ता है इस तरां। धृत 'ते आकाश विचला राबता है जिस तरां।

चढ़न हारा दिन

चढ़न हारा दिन है यारो ग्ज़र जाणी रात है। हर हनेरी रात पिछे सोन जही प्रभात है। गिर गिआ सैं किस तरां ह्ण उस दा ना वहिम कर, उठिआ हैं जिस तरां इह बात ही एक बात है। आह! बिजलीओं ने साड़ 'ता सहिवन ख़लोते रुख नू, इह रुख दी जीरांद है उह अग दी औकात है। की सोच के बदली ने देंसो चँन दा राह रोकिआ, पाणी पाणी हो गई होइआ जदों एहसास है। पंथर दा सीना फोल के बुत घाड़िओं नें वेखिआ, पंथर दिलां दे विच वी कोमल कला दा वास है।

सितंबर 2001

(नाइन इलैवन)

किस तरां दा साल सी लंघिआ जो साल है। तर्क सी, वंगार सी, कहिणा मुहाल है।

ठंडी लड़ाई विच तां सी ख़ून ही सुफ़ैद, इस दौर विच तां अथरृ वी सूहा लाल है।

आदमी ने धर्म एक घड़िआ सी आसरा, उह जनूनी हो गिआ उह फिर निढाल है।

मर्गिआं लई वैण तां उही जो सन हमेश, कातिलाना क़हिर, रंजिछ, बेमिसाल है।

एक तरफ़ बिजली जो साढ़े गरज तों पहिलां, दूजी उह बलदा बिरख जो अग ते सवार है।

उँचे महॅलां विच वी ह्ण लोक बे आराम, जो शोर शहिरों दूर सी हुण महिलां नाल है।

याद पॅथर

पिंड रुढ़ जाएगा बनृ जे ट्टिआ, क़ाज़ी ड्बा फ़िक्र विच ही मर गिआ। समें दी सरकार पर ना गौलिआ, दरिआ वी च्प चाप ही वगदा रिहा। आ गई एक दिन अचानक कांग फिर, रुढ गिआ जो वी जिधर भजदा रिहा। लै गिआ मिट्टी वी पिंड दी रोड़ के, माल ढांडा ना ख्रा वॅग दा रिहा। मगरमछ दे अथर् केरे त्रत सरकार ने, सिलसिला फिर शोक़ मतिआं दा बड़ा चलदा रिहा। मोईआं दे नां खुल गए फ़ंड देस वी परदेस वी, अगली आफ़त औण तक धंदा बड़ा फलदा रिहा। बन् किउं ट्टा, किवें ट्टा ते क़ाज़ी मर गिआ, उच पधरी जांच दा एक भ्रम वी पलदा रिहा। मंत्री जी पिंड दी थां याद पॅथर ला गऐ, बरसीआं ते हर्रा लाटू हर वरे बलदा रिहा।

जे रुख ही ना रहे

कोई ते हौंसला देवो, मेरे उस देस बाबुल नू, उह पर्वत हौंसले वाले, खुरदिआं खुर रहे वेखो। मावां हसदीआं िकउं रोंदीआं,ह्ण हर जणेपे ते। ख़ूशी ते ख़ौफ़ दे हंझ़, इकहे विह रहे वेखो। पाल पोस के धीआं, घरां तों सी विदाअ करदे, पाल पोस के पुतर तां, वतनों तुर रहे वेखो। काले पानीआं दा नाम,ते बदनाम सी पहिलां, गोरी धरतीआं ते पूर, भर भर लिह रहे वेखो। सदा ही आल्णे नू,बिरख दा मिलिआ सहारा सी, सितम! कुझ आल्णे ही,बिरख उथे निगल रहे वेखो। जे रुख ही ना रहे,दस आल्णे सिर ते बणाउगे, परिंदे आल्णे वल,प्रतणों ही झिजक रहे वेखो।

गीत लिखदा हाँ

हार दी हार लिखदा हां, जीत नूँ जीत लिखदा हां। गीतकार हां में ज़िंदगी दे गीत लिखदा हां।

मेरे गीतां 'च मेरे मितरां दा ज़िक्र ह्ंदा ऐ। मेरे गीतां 'च सांझे दुशमनां दा फ़िक्र हुंदा ऐ।

मेरे गीतां दिआं नैणां 'च बिरहों रड़क वी पैंदी। कदे पर बेबसी मेरी चौराहे रोण नहीं बहिंदी।

मेरे गीतां 'च इस इनसान लई अरदास ह्ंदी ऐ। हक़ इनसाफ़ लई आखण, सुणन दी आस ह्ंदी ऐ।

मेरे गीतां दे वस होवे शब्द कोई मरन ना देवां। स्याही पनिआं क़लमां 'च अथर्व भरन ना देवां।

ममता रोल के कोई पुत फिर परदेस ना आवे। केवल रुज़गार लई ला के दिलां नू ठेस ना जावे।

मेरे गीतां दी धरती ते कई एक वार इंज होइआ। हनेरे छा गए घुप घेर बूहा चानिणी ढोइआ।

मगर सुनसान गलीआं 'चों उह खेड़े फ़ेर चहिके ने। जो दैंतां ने उजाड़े सी बगीचे फ़ेर महिके ने।

इहनां नू रब दीआं रखां रहिण सुरजीत लिखदा हां। हार दी हार लिखदा हां, जीत नूँ जीत लिखदा हां। गीतकार हां मैं ...

हिंदूस्तान दे भाग

किस्मत कुल जहान दी तेज़ होई, लिशके भाग किउं नहीं हिंदूस्तान तेरे। नीवीं नज़र उदास मायृस चिहरे, फ़र्दे सिख, हिंद, मुस्लमान तेरे।

उहनां घर रुज़गार लई लैण तरले, कहण गए जो कल गुज़रान तेरे। आखू कौण हिमाला दी धौण उची, दोहरे लक जद फिरन आवाम तेरे।

असीं हो के वी नहीं आज़ाद होएं, किउं नहीं पुछदे लोक सवाल यारो। देवां दोष ह्ण किहड़े फ़रॅगीआं नूँ, वध के देसीआं कीती कमाल यारो।

फ़ेर मज़हब नाल मज़हब टकरा दिते, राज विटरे राजां दे नाल यारो। एक डेगदी दूओ उठाल लैंदी, पिछों खिच के जुंडली तार यारो।

वडे छोटियां नें पा लए मूल आपे, छिके टंग लई रता वडेरिआं नें।

जोबन रुते किसानी दी शाम होई,
मूँह फेरिआ संझ सवेरिआं नें।
दिने ल्ट लई चोर बाज़ारीआं नें,
रातीं चूंड लई साधां दियां डेरिआं नें।
स्रख़ी रोज़ अख़बार दी ड्रसकदी ऐ,
पी लई रात सल्फास बथेरिआं नें।
आवे वाज शहीद दी मढ़ी विचों,
मेरी मढ़ी ते दीवा जगाईउ ना।
जिचर कंडे गुलामी दे बीजदे ओ,
मेरी मढ़ी नू फुल छुहाईउ ना।
मेरी सुर थीं सुर जे मेलदे नहीं,
ऐवें गीत आज़ादी दे गाईउ ना।
लिखो सचीआं कोसदी लेखकां नूँ,
अैवें फ़ालतू कलम घसाईउ ना।

पगड़ी सँभाल जॅटा

उठिया ए फ़ेर तेरी होंद दा सवाल उऐ। पगड़ी सँभाल जॅटा , पगड़ी सँभाल उऐ।

जिनहां नू तू जाणिआं असीलधोते नृति नें। दिख दी नहीं गॅल, इह तां अंदरों सरापे नें। खुलीआं नहीं अखां जॅटा तेरी वी कमाल उऐ। पगड़ी सँभाल जॅटा. . . .

जॅटा तेरे नाल जॅटां वांगरां खलोवां गे, साडे नाल तुर तेरा पाणी इसीं ढोवां गे, भुल गए उह क़ौल कीते टुट गए क़रार उऐ। पगड़ी सँभाल जॅटा. . . .

गिण लै स्कूल मुंडे क्ड़ीआं पढ़ा 'ते, हरीजन पहिलां ही सी खूहां ते चढ़ा 'ते, कम, रोज़गार कहिंदे वखरा सवाल उऐ। पगड़ी सँभाल जॅटा. . . .

महिंगीयाँ दवाईयां खादां फ़सलां ते पा रिहैं, चूक के विआजी टोंबू शाहां तों लिखा रिहें, मंडी 'च पुचाइआ माल देंदे तेरा गाल उऐ। पगड़ी सँभाल जटा.

गिरवी ज़मींन उतों क़िसतां घनेरीआं, ट्रैक्टर ट्राली शाहां सड़कां ते घेरीआं, लंघ गए वज़ीर बती कार उते लाल उऐ। पगड़ी सँभाल जटा....

अदबी ख़ानाजंगी

खंबे 'च ढाल पुसतक, सॅजे कटार कानी, इह अदब दी लड़ाई घमसान तीक पहुंची।

क़लमां दे इह धनँतर गालां देवी धनी नें, दिल चों द्वैत उठ के ज़ुबान तीक पहुंची।

पगड़ी दी ख़ैरसल्ला, कुरसी ना जाऐ अल्लाह, सन्मान दी लड़ाई अपमान तीक पहुंची। गुलदसतिआं दे उहले गुठबँदीआं दे दसते, तहिज़ीब दी इिह अरथी शमशान तीक पहुंची।

अग दी तिपश इह सभ नू ह्ण दूर तीक साई, मेरी नज़म तों तेरे दीवान तीक पहुंची।

खंबे 'च ढाल पुसतक, सॅजे कटार कानी, इह अदब दी लड़ाई घमसान तीक पहुंची।

कला कुदरत

जे कोई साडी कला 'च भोरा क़्दरत होई, तां उह आपे आपणा रंग लियाए गी।

रुख इकॅला वेख जो बिजली फूक गई, नवीं करृंबल निकलेगी मुस्काएगी।

नदी कि जिस नू उसदी रेता डीक गई चशमा चशमा फुटेगी वल खाएगी।

जोबन रुते फ़िकरां सदका उलझ गई, जुलफ़ उह काली संवरेगी लहिराएगी।

उह नगरी जो दैंतां रात लिताड़ी सी, लो लगी 'ते चहिकेगी महिकाएगी।

जिस खाई विच लाशां सुट के हसे सउ, भाजड वेले उह टपी ना जाएगी।

पांधे कोलों पुछ पुछ जम जम तुरदे रहो, ना – इनसाफ़ी कुंडली रास ना आएगी।

धर्म राज कोई है वी है कि है ही नहीं, लोक कचहिरी अंबरीं टीम चढ़ाएगी।'

में वी पीढ़ी हेठां सोटी फेर लवां, वारी वारी सभ दी वारी आएगी।

स्णिअं लेखा दफ़्तर ऐथे खुल जाणा, फिर ना आखीं, अगे वेखी जाएगी।

तेरी दीद

तेरी दीद दा जे नज़ारा ना ह्ंदा।
पैरां नू पैंडा गवारा ना हुंदा।
ठिल्दे ना बेड़े इह चलदे ना चपू,
जे सागर ही हुंदे किनारा ना हुंदा।
कदों कोई सड़दे थलीं पैर पाउंदा,
जे मौतों परे उह पिआरा ना हुंदा।
किचआं नृ किहड़ा लगाउंदा कलेजे,
इशक जे झला बवाहिरा ना हुंदा।
टोए गरीबी दे ह्ंद ना डूंघे,
जे महिलां ते वाधू मुनारा ना हुंदा।
ते डांगीं ना मिणदे इह चोरी दे कपड़े,
जे चोरां नू मिलिआ हुँगारा ना हुंदा।

चॅकी

एक चॅकी विच दाणा दाणा पिसदे हां, एक दूजे तों पीड़ छ्पाई फ़िर्दे हां। दिल मंदिर तां नित दिहाड़े ट्टिआ है, खँडरां दा एक भ्रम सजाई फ़िर्दे हां। जिस टाहणी ते बैठे, कटदे जांदे दाईऐ पुशतां लमे लाई फ़िर्दे हां। श्तर म्रग दे वांग सचाई दे साहवें, रेते दे विच सीस दबाई फ़िर्दे हां। अन-दिसदा एक डर जिहा, एक सहिम जिहा, अपने अंदर आप बिठाई फ़िर्दे हां। कंध 'ते मोटा मोटा लिखिआ वेंहदे नहीं, नज़रां उंज अस्मान चढ़ाई फ़िर्दे हां। अपनी पीढी हेठां सोटी कौण करे. सारे पिंड लई वँझ वलाई फ़िर्दे हां। तौक गलां 'चों लह्ण दी सोझी कौण दवे,

कैंठे वांगूँ गलीं सजाई फ़िर्दे हां।

मौत तों पहिलां ही यारो मर जाण लई, एक दूजे संग जाम वटाई फ़िर्दे हां।

दिल

दिल तां उहियो करदा मन जो किहंदा है।
पर जुरमाना दिल नू भरना पैंदा है।
दिल जिथे खिलृआरो शायद टिक जावे,
चंचल-हारा मन ना टिकिआ रिहंदा है।
मन 2 आईआं कर के दिल जे हार बहे,
दिल नू ही हर्जाना भरना पैंदा है।
है तां जोत सरूप जे मूल पछान लवे,
पर मन असे झंझट विच ना पैंदा है।
दिल है उह दिशा समुंद्रों डूंघा जो,
रब वी ऐसे ही दिशा विच रिहंदा है।
इस दिशा विच दिल वाले ही उतरे नें,
दम घुटदा जद डुबणा तरुना पैंदा है।

डाइनोसार दा कूच

किस तरां दा ऐ पतंदर, की तमाशा कर रिहा। उते पिआ वी रो रिहा, मारदा वी डर रिहा।

रूहों बिनां क़लबूत है, उहो जिही करतूत है, बहुता लताड़ी जा रिहा, लोड़ों वधेरे चर रिहा।

ढाह के पराईआं खुरलीआं, चौंतरे 'ते चड़ रिहा। किंले पुटाई जा रिहा, मंगृँ आवारा कर रिहा।

शॅकी कलेछी आप है, परछाविआं नू फड़ रिहा। सॅपां नू उधर पालदा, रसीआं तों इधर डर रिहा।

चढ़दी सदी तों झिजकदा, मुड़ सोलवीं विच वड़ रिहा। एक पैर अगे पुटदा, दो क़दम पिछे धर रिहा।

बोझल सरीरों हो गिआ, लालच जु अैना कर रिहा। गिड़गड़ाउंदा सुणींदा, डाइनो दुबारा मर रिहा।

शाहदी चानणी दी

दिल दीओं तरबां नू सिहवन छेड़िआ। भर ज़माने दे ग़मां आ घेरिआ। किउं भला उस तोड़ के सुटी रबाब, फिर दुबारा राग मारू छेड़िआ। रिहणगे भड़ए उह पिआसे आप वी, खूह पुठा रल जिनहां नें गेड़िआ। काफ़िले विचे ही रिलआ चोर है, लुट गऐ दी जो दुहाई दे रिहा। अँख जे मैली दी मैली ही रही, की सवारृ साफ़ अथर् केरिआ। लोक शाहदी चाणनी दी भरनगे, कालखां भावें चौगिरदा घेरिआ।

वक्त दी पहिचान

लोड़ है अज सोचदे इनसान दी।
लोड़ है अज वक्त दी पहिचान दी।
हर हनेरी रात आख़िर मुकदी,
डल्कदी लाली जदों अस्मान दी।
लभदी है ज़िंदगी तद् मौत चों,
लगदी बाज़ी जदों है जान दी।
उह हआ तों ने उचेरे उड़दे,
सोच जो रखदे हवा दे हाण दी।
तारा तारा हो के इह टूट जाए ना,
चिंतको चिंता करो अस्मान दी।

बे वसाही क़लम

उहनां दे नाल सां ना मैं इहनां दे नाल हाँ। दोहां विचाले ठण गिआ में उह सवाल हाँ।

बे वसाही क़लम ना तलवार कट धरे, क़लम नू टुंबदा जगाउंदा बार बार हां।

राहां ते रिशतिआं नू जिस पटड़ी बणा लिआ, उस माल - गडी सोच दा ना में सवार हां।

शीशे 'च रहिण वालिआं पॅथर सँभल लऐ , इस बे- दरेगी फ़ौज विच ना मैं शुमार हां।

नेकी बदी दी रेत विच जो रुल गई लकीर, उस मिर्ग छली लकीर दे मैं आर पार हां।

देणी दुहाई रब दी बंदिआं दे नास लई, धर्म! असे धरमीआं तों शर्मसार हां।

नरकीं स्वर्गी पह्ंच के जो जी करे करीं, इस धृत ते इनसाफ़ दा मैं तलबगार हां।

जाद्गरी

इह नहीं मेरी कहिण दी जादूगरी। इह तां तेरी समझ दी सोहिर्दगी।

में 'जिहा कामिल नहीं हां दोस्ता, अर्थ तेरी रूह दी पाकीज़गी।

तार 'ते तुरना पिआ तुरदे रहे, तोर थिड़की उलरी ते डगमगी।

मेल तेरे दा ही सी इह तां कमाल, घुप नेरी रात मेरी जगमगी।

दिलां दी दिल वी किते ना जाणदे, तकदी ख़ाली इह बिट बिट ज़िंदगी।

काहदी लो

काहदी लो जो ना टॅकरी हनेरिआं देनाल। रही अटकी जो सरघी सवेरिआं देनाल। काहदा निघ जिहड़ा सूरजां दे पास ही रिहा, काहदा दीप जो ना सजिया बनेरिआं देनाल। सुण पाणीआं दे गीत ते रवानीआं दा राज़, तक ठोकरां उह पॅथरां किनारिआं दे नाल। वटे फ़ेर वी ना नदीआं उह संगमी सुभा, मिठे पाणी जा मिलाउंदीआं नी खारिआं दे नाल। काहदी लो जो ना टकरी हनीरयां देनाल, रही अटकी जो सरघी सवेरिआं दे नाल।

नाराज़ कानी

नाराज़ सी कानी जां रुत बीमार सी। कुझ वी साबित लिखण तों लाचार सी। दिल किते जे वांग केले झूमदा, झूमदे नू तुरत पछदा खार सी। तुर पिया एक दिन दुमाला बन् के, उह हर निपुनसिक सोच तों बेज़ार सी। जो वी हैं चल सांभ लऊं, आ साहमणे, उह हर वबा निपटण लई तैयार सी। नाराज़ सी कानी जां रुत बीमार सी। कुझ वी साबित लिखण तों लाचार सी।

हिम्त-ए-मरदां

किसमतां संग मिहनतां दा साथ है।

उह तर गिआ जिस कर लिया एहसास है।

बैठ के किस्मत नू जिहड़े झूरदे,
मँज़लां नू हइ ना रस्ता रास है।

रोंदियां ते रब वी नहीं रीझदा,

उसदा वी इह रवईआ ख़ास है।

हिम्त - ए - मरदां अते मदद - ए - ख़ुदा,
शाइर हां मेरा तां इह विश्वास है।

किसमतां संग मिहनतां दा साथ है।

उह तर गिआ जिस कर लिया एहसास है।

मसीहा

असीं ही हां मसीहा उह, रहे सां टालदे जिस न्।

किसे नहीं बहुइना अशीं, रहे हां भालदे किस न्।

जे ह्ंदा इस तरां, रहिबर कदों दा किह गिआ हंदा,
जफ़र ना वेखदे इस ज़िंदगी दा जालदे उस न्।

ज़ाती मुकतीआं तक दौड़ ही जे दौड़ सी सीमत,
कदों दी जित गए हुंदे उह, गौतम नाल दे उस न्।

असाडी कंध विच बूहा तां है, पर चीख़दा खुलदा,
आवेगा किवें लभदे हां दीवे बालदे जिस न्।

चौहीं पासीं बणा के रुख बूहे आऊण दे आउंदा,
जो नगमा पुरखिआं छोहिआ नवां सुर ताल दे उस न्।

असीं ही हां मसीहा उह, रहे सां टालदे जिस न्।

असीं ही हां मसीहा उह, रहे सां टालदे जिस न्।

किसे नहीं बहुइना अशीं, रहे हाँ भालदे किस न्।

सूरजां वेहढ़े

उम्र भर जिस नू रिहा सां भालदा। सूरजां विहदे ही बतीआं बालदा। नेरीआं गलीआं तों कतराउंदा रिहा, उह सी कोई जुगृआं देनाल दा।

लेखा जोखा

बीत गए दा लेखा जोखा करदे लोक। आवन वाले कल दी चिंता, डरदे लोक। अज जो बीज लिआ उही कल वढनगे, कंधां उते लिखिआ पर नहीं पढ़दे लोक।

बुझदी बलदी

अग दी इह खेड जे चलदी रही।
हवा वी इसकदर ही रुलदी रही।
बिरख तां की बीज वी भुज जाणगे,
ऐसे तरां बुझदी कदी बलदी रही।

मैं जुगन् हां

हनेरी रात 'चों रस्ता मैं आपणा चीर लां गा। नहीं पर शूकदे दरिआ 'च एवें नहीं वड़ां गा। जे पल भर बुझ गिआ समझीं ना कोई डर गिआ सां, मैं जुगनृ हां जदों तक खँभ ने में फिर जगां गा।

रब वर्गा भरवासा

रृख ते शिकरा अते शिकारी हेठां विछिआ जाल। वेख चिढ़ी ने बोट आलॄणे घुट लऐ हिकड़ी नाल। मां! बोटां लई खँभां हेठां रब वर्गा भरवासा, मैं हां ना! नहीं होण दिआंगी बचिउ विंगा वाल।

बंदे दे भाग

उलटी सिरज लई सृ दुनीआं पढ़ पढ़ ज़िहरी मंत्र। अपने घर लगे ते तड़फ़े दूजे घरीं बसँतर। जे इह सौढ़ी सोच बदल के प्यार दी डोर वधावे, घुग वसे ते वसण देवे समझे विचला अँतर।

बस्ती रहिण वाली है

इह झखड़ गुज़र जाणा है इह बस्ती रहिण वाली है। इह बुहती देर नहीं वगणा फ़िज़ा कुझ कहिण वाली है। जो घंटा हो गिआ कॅठ्ठा इह बहुती दूर नहीं जाणा। मुसीबत है इह मिट्टी हर किसे सिर पैण वाली है।

जे पुत्र हट्टां ते नहीं विकदे!

जे प्त्र हट्टां ते नहीं विकदे, धीआं ना मिलण बाज़ार क्ड़े। इह सौदा सचा सौदा नी, इह नक़द ना मिले उधार कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

इह है दात दीन के दाता दी, उह पुत होवे जां धी होवे। दोहां दी आउंद मुबारिक नी,तूं की जाणे उह की होवे। दोहां दी होंद दे सदका नी,पिआ चलदा कारविहार कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

पुत् जे आंन घरां दी नी, धीआं ईमान गरां दी नी। धी रौणक बाबुल वेहढ़े दी,सुख मंगदी हरदम मां दी नी। किउं हतिआ फेर भरूनां दी,की मावां दा किरदार कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

प्त्रां संग वेल जे वधदी नी,धीआं संग फ्लदी फलदी नी। इह गोदीआं वीर खिडाउंदी ऐ, ख़ुशबृआं वांगूँ पलदी नी। उह कद तक बाग सलामत नी,जीहदी ख़ुशबो खाणी वाड़ कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

धी कद कमज़ोर निमाणी नी,इह भागो नी इह भानी नी। इह जननी है राजानां दी, इहदी लँमी अमर कहानी नी। इह झांसी दी सरदार कुड़े, इह उुडनहार पुलाड़ कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

कर हिम्मत बदल समाज कुड़े,छड असे रीत रिवाज कुड़े। धीआं नृ तकड़ी तोलदिआं, जिस बधे पासकु दाज कुड़े। इह मां लई मिठा महुरा नी,पिउ सिर ते भार पहाड़ कुड़े। जे पुत्र हट्टां ते...

पैर खड़ावां

काले बद्दलां आदि ज्गादों धोती मैली धरती, पर ना दागधुपण विच औंदे कलॄ जो असां लगाए।

महिक फुलां दी दे विच भावें सौ स्तरंगे जादू, पर उह किवे संभालण अगिनी पॅथर जो पिघलाए।

इल मौत दी बैठण ख़ातिर लभदी फिरे बनेरा, पिंड नींदर विच घृक है सुता इल नृ कौण उडाए।

आस्तक ते मैं वी हां पर रब नहीं उह मेरा, कल्पित किसे स्वर्ग दी चाबी ऐकिन हथ फड़ाए।

इह पैंडा ते आपणे पैरीं आपे तुरना पैणा, पैर खड़ावां पा के किहड़ा बार बार समझाए।

ब्त दी श्लाघा

भारती पार्लीमेंट विच शहीद भगत सिंह दे बुत लगाउण दी मनज्री नृँसमर्पित नहीं सी गरज़ उहनां नृ उह मर के किधर आवणगे। मिट्टी हेठ दबणगे जां नदीए रोड़ आवणगे। उहनां दे वारसां नू चिख़ा लई किस शरफ़ है देणा, बिनां अरदासिआं लावारसां संग जा समावणगे। उह बण के हर्फ़ इकण काग़ज़ां ते बिखर आवणगे, जां साडी रूह विच कविता दे वांगृँ उतर जावणगे। ते स्ती आत्मा साडी नू टूंब टूंब के जगावणगे, अंत इतिहास वी उस हर्फ़ नृ कीकण मिटावणगे। मैं स्णिआं शहिर ह्ण वडे वी उस दा बुत लगावणगे। उहनां ख़ातिर सलीबां ते जो टंगे लाहे जावणगे। कई सूरज चढ़े लथे ते रंग जे झऊं गिआ थोड़ा,

उह मां दे कहिण ते चोला बसंती फिर रंगावणगे।

छज बोलदा है

झूठ बराबर सँच ते सँच सी रॅब यारो। हथ ना लॅगे सँच अज किसे सबब यारो।

पार किनारे विरला वांझा पह्ंचेगा, जिधर वेखो गोते खांदे सभ यारो।

भवसागर कोई तर आवे तां पुछां गे, ऐथे वध भियंकर भलक ते अज यारो।

रहिबर ने तां सानृ तरन सिखाइआ सी, डुब्न किनारे कीकर पहुंचा जॅग यारो।

झूठ ते लख़ दुशाले कलगीयां लाई जा, नंगा फिर वी हो जाणा करतब यारो।

सूरज साहवें बैठा बतीयां बाली जा, बुधृ कहि के लंघ जावणगे सभ यारो।

मुरशद ने तां सानृ तर्क पढ़ाइआ सी, मैं ना मानृ किथों सिख़िआ चॅज यारो।

तर्क ज्ञान तों सँखणे भांडे ठहिकण गे, ठहिकण वाले भांडे जांदे भँज यारो।

अजे वी डुले बेरां दा क्झ विगड़िआ नहीं, बाबे वाला किलीऊं लाहीए छज यारो।

कचरा, मिटी छटण 'ते ही छटदे नें, चुप छानणी हुण तां बोले छज यारो।

गदरी बाबिआं नू समर्पित

(सैकरामैंटो 10 ज़ुलाई, 2010 विच ग़दर मैमोरीयल पंजाबी कान्फ्रेंस अते 10 वें रहतली मेले दे मौके ते गदरी बाबिआं नृ समर्पित कविता

गदरी बाबिउ परत के वेखिउ जे, वारिस तुसां दे किहड़े मुक़ाम पह्ंचे। उही जृह ते शहिर गिरां उही, पैड़ां नापदे क़दम निशान पह्ंचे। गूंज गदर दी गृंजदी रही जिथों, उहनां राहां नृ करन सलाम पह्ंचे। वणजे तुसां दे उस विपार विचों, वेखण आपणा नफ़ा नुक़सान पहुंचे।

आखण तुसां आज़ादी दे घोल अंदर, कामे भारती 'कठिआं करे कीकृं। सोहन सिंघ ते लाला हरदयाल वर्गे,हीरे चाक दामन अंदर जड़े कीकृं। आइआ पढ़न सराभा ते बर्कले सी, सबक़ ग़दर वाले उने पढ़े कीकृं। बरकतउला दी क़बर ते बैठ रोऐ, इथे सुतिआ, बीत गए वरहे कीकृं।

चढ़े देस आज़ादी लई जंज ले के, सिहरे सिरां ते किस तरां धरे 'कठे। ज़ात पात ते धर्म नृ रख पासे, कीकण बाबिउ लड़े ते मरे 'कठे। ढठे पिआं दी किस तरां बणी हिम्त, रसे फांसीआं ते चढ़केफड़े 'कठे। चश्मदीद इतिहास गवाह साहवें, कबरीं पए 'कठे सिविआं सड़े 'कठे।

असीं हो के वी नहीं आज़ाद होए, लोक पुछदे फिरन सवाल उही। उचा होर उचा, नीवां होर नीवां, चाही तुसां कुझ होर, ते होर होड़ी। बदले घोड़सवार ही घोड़ियां दे, चाबुक रही, लगाम ते डोर उही। देइए दोष हुण धाड़वी किहड़िआं नू डोली जदों कहारां ने आप खोही।

बाबे आखदे हँभला मार उठो, सुपना सुतिआं नाहीं साकार होवे। तुर पए देस वासी जदों हो 'कठे, ना इह कारवां फेर खलिहार होवे।

ह्क दिलां दी गदर तद् गूंज बणदी, आम आदमी जदों दुशवार होवे। ऐस गूंज अगे भोरा ठहिरनी नहीं, नीली,पीली जां लाल सरकार होवे।

नवां जुग

उस जुग दा अंत होइआ, इस दा आदि होइआ। हैरान इस लई हां, बड़ी देर बाद होइआ। उह दब रिहा है आपे, आप ने ही भार हेठां, जुग बदल दा तिलिस्म, तां बिन आवाज़ होया।

इस रुत विच बड़ा कुझ, झड़ना ते फिर पुंगरना, सभ संवरना उह ताणा, बाणा ख़राब होइआ।

इस दौर विच ना रहिणे, रंग नसल दे बखेड़े, हर धर्म विच मिलेगा, बंदा आज़ाद होइआ।

ह्ण धरत मां दे सारे, रोसे ते ताने मेहणे, गिण गिण के लाह दिआंगे, जो वी हिसाब होइआ।

पैसा पीर नहीं है

पैसा पीर नहीं है त्र गए पीरां ने फ़्रमाइआ। जो फ़्रमाइआ उस 'ते उहनां त्र के आप विखाइआ। लालो दे घर वेखो खां अज किहड़ा पीर खलोंदा, कथन अखौती पीरां, उहनां पीरां दा झुठलाइआ। इह तां पीर फ़क़ीरी दावा रस्मी वी नहीं करदे, ढींग बणा के बैठ गए नी, उचे वल चोगिरदे। लालो दे पिंड कर्मकांड, अगिआन हनेरा छाइआ। कथन अखौती पीरां, उहनां पीरां दा झ्टलाइआ। चेलियां दे वी वारे जाईए फ़र्क़ मूल ना करदे, रब समझ के हर मंजी दे जा पावे घुट फड़दे। मंजीआं वाले रब ही जाणे किंज समझण हमसाइआ। कथन अखौती पीरां, उहनां पीरां दा झुठलाइआ। चारासाज बनाए जिहडे कर 'ते फिर बेचारे, पैसा पीर ज़ मौटो लिख 'ता सरकारे दरबारे। मखण शाह नृ फेर पै गिया करना पंध सिवाइआ। कथन अखौती पीरां, उहनां पीरां दा झ्ठलाइआ।

पैर खड़ावां पा के किहड़ा उहनीं राहीं आवे, दस वारी समझाई जिहड़ी हुण किहड़ी समझावे।

अजे ना लथा सिरों साडियों पहिला कर्ज़ चढ़ाइआ। कथन अखौती पीरां, उहनां पीरां दा झुठलाइआ।

तां मॅनां

धर्म अते ईमान इह जीवन है जां नहीं, जीवन नृ ईमान बणावें तां कँधां दे वलगन ज् वल के बैठ गिआं, वलगन 'चों गल बाहर लिआवें तां मॅनां। कॅनां विच ज़ गुझे मंत्र देना ऐं, साफ़ साफ़ उह गल समझावें तां मॅनां। इह प्ड़ीआं विच वेचण वाली चीज़ नहीं, प्ड़ीआं उतले लेबल लाहवें तां मॅनां। हर मंजी दे पावे घ्टदा फ़िर्दा ऐं, लाधो रे फिर कृक स्नावें तां मॅनां। वेदांती दी धौंस ज़ हर दम देना ऐं, कंध 'ते लिखिआ ही पढ़ पावें तां मॅनां। उह जो पैर खड़ांवां पा के त्रिआ सी, त्र के उसे राह विखावें तां मॅनां। चीची ख़ून लगा के बणीं शहीद फिरें, आप ते सारा बंस, ल्टावें तां मॅनां।

सुण अँबर शहजादीए

मन्क्ख दी एस अण-मन्खता दा शिकार होई धरती , अंबर दी शहज़ादी कोल, ह्ण धृत भगौड़ा आदमी जिस दा दर मलण लई उतावला होइआ पिया है, फ़र्याद करदी है:

स्ण अंबर शहज़ादीए, मैं मँगां तेरी ख़ैर। मैं धरती तेरी भैण हां, नां समझीं मैन्ँ गैर।

इह ज्गां प्राणी गल नी, असीं नॅचीआं सां भर ज़ोर। मेरे किक्ली विच हथ छुट्ट गए, ते मैं डिग पई किधरे होर।

फेर समें दी धृड़ नें, मेरा ठंडा कर 'ता ताअ। मैं आदम यार बणा लिआ, गई तैनृँ भुल् भुलाअ।

में सभ कुझ इस नू सौंपिआ, इहदे कुंजीआं हथ फड़ाअ। मैं आपों मिट्टी हो गई, मेरा अजे ना लथा चाअ।

पर अज तक आई समझ ना, इह कैसी आदम ज़ात। मैनृ वढ बनाईआं ढेरीआं, मैं रोंदी रही दिन रात।

मेरा चृंढ कलेजा खा गऐ, इहदे धर्म नसल 'ते ज़ात। किंज बझीयां मुशकां मेरीआं, आ पावीं नी एक झात।

में गिण ना सकदी दुख नी, जो दिते मैनृ ऐस। मेरे हीरोशीमा सुलघदे, मेरे नागासाकी वेख।

मेरे सागर ज़िहरां दबीआं, मेरे ज़ख़मी कुल दरिआ। मेरे लूं लूं भरिआ ज़िहर नी, हो रोगी गई हवा।

इह पर्बत सागर छाणदा, किहड़ा लिया सृ लाल गवा।

जो वस्त गवाई धृत ते, फिरे लभदा विच खला।

मैन्ँ कैंसर रोग लगा के, ह्ण उड पिया तेरी वल। मैन्ँ हसद नहीं तेरे नाल नी, मैं तां अज मरी जां कल।

मैनृँ फ़िक्र कि तूं अनभोल हैं, तेरे आइआ आदम चोर। तूं नाज़क सूच्ची कली ऐं, इह बूटां वाला भोर।

इह कलीओं सुंघदा मसल के, डाली सणे मरोड़। इह खोजां करदा मौत ते, इहनृ नहीं ज़िंदगी दी लोड़।

पहिलां अख मिलाउण तों, इहनृ पुछीं नी उह गल। जद चौहीं पबीं खड़ा सी, मेरे बार बर्हां मल।

अज उहीउ काईिआं पलट के, आइआ दर तेरे ते चल। नी इह धृत भगोड़ा आदमी, किते जाऐ ना तैनृँ छल।

रूह मेरे पंजाब दी

1952 विच चन्दीगढ़ दा जनम किसे अलोकार क्ड़ी दे जन्म वांग होइआ सी। राजधानी दे पहिले चीफ़ कमिशनर डाक्टर महिन्द्र सिंघ रंधावा दे कारज काल वेले चन्दीगढ़ 1968 विच, उनां दी प्रधानगी हेठ पहिला रोज़ फ़ैस्टीवल मनाइआ गिआ सी, जो इज बैन-उल-अक़वामी पधर ते मनाइआ जांदा है। उस अलोकार क्ड़ी दी 16वीं सालगिरा 'ते 7 अप्रैल 1968 विच मनाए गए इस पलेठी दे रोज़ फ़ैस्टीवल विच पशोरा सिंघ ढिंलों वलों पढ़ी गई सनमानित कविता:

जद रूह मेरे पंजाब दी, छुप बैठी ऐस मैदान। उहनृ लभण खोजी चढ़ पऐ, बंदे सुघड़ सुजान।

आ पैड़ां लभीआं माहिरां, ला ला लख अनुमान। उहदा रूप तसवुर तक के, सभ चक्र लगे खान।

इह झलक अनोखे ह्सन दी, साडी कर गई नींद हैरान। असां सदिआ ली करबृज़ीअर, उस लीती मर्ज़ पछान। उह मालिक सुची कला दा, उहदे चर्च विच जहान।

ऊस फड़िआ तेसा अक़ल दा, इहदे लगा नक्श बणान। उहदे नाल मेरे इनजीनीअर, इहनृ जुट गए घड़न घड़ान।

ह्ण हो गई म्टिआर इह, ते अज चढ़ी प्रवान। इहनृ च्नी दवे हिमालीआ, हथ सिर ते रखे आन।

इहदे नैण कटोरे झील दे, अज उडदे पंछी फाहन। इहदी ज़ुलफ़ दी छावें खेड दे, मेरे सैक्ट्रीएट, विधान।

इहदा इश्क रंधावा साहिब नृ, इहदे खिच लिआइआ पास। उस जिउं जिउं चुँमिआं ऐस नृ, इहदी तिउं तिउं निखरी आस।

इहदी मांग भरी गुलमोहर नें, इहदे कँनी अमुलतास।

मथे बिंदी लाए रसीलीआ, इहनृशीशा दवे आकाश। इहदे बुलीं लग रुकमंजनी, एक रंग भरेंदी ख़ास।

इहदी वीणी चूड़ा कैसीआ, तक मजनूं भए उदास। हइदी झांजर फली श्रींह दी, जीहदी छन छन विच आकाश।

इहनृ पिलखन छावां कीतीआं, इहनृ सिंबल आए रास। इहनृ पिपल पतीआं सोंहदीआं, इहनृ बोहड़ देण ध्रवास।

रौयल पाम जिहीआं गोलीआं, इहदे पहिरेदार अशोक। इहदे माजू वर्गे संतरी, जिहड़े मौत खलोंदे रोक।

रोज़ गार्डन ऐसदा, कोई जन्नत दा हिसा।

इहदी डाली डाली गावंदी, किसे सोहणी दाक़िसा।

*स्ँदरी एक यूनान दी, कोई आशिक़ तों क़तरा। छुप बैठी मंदिर जा के, एक फुल दा रूप वटा।

तद देवी सूचे पिआर दी, उहदा रुखिआ नाम गुलाब। उहदे आशिक तद् तों भटकदे, ते फ़िर्दे नी बेताब।

ना रंग नवें नित बदल नी, ते ना साथों शर्मा। तैनृ फिरे पशोरा ढूंडदा, कुड़े हुण ते नज़र मिला!

^{*} यृनानी मिथिहास

आ कॅंडिआ तैनृँ सीने लावां

आ कँडिआ तैन्ँ सीने लावां, दर्द सुणवां दिल दा। फुलां नृ कोई की आखे, जद नहीं हुंगारा मिलदा। आ कँडिआ...

पंखड़ीओं नृ हर कोई चुमे, लोचे प्रीत लगाण। संगी बण तूं वेख लिया, फुलां दा होर टिकाणा। कलीयों फुल् बणे ते महिके,दिल तां हाणी मचलदा। आ कॅडिआ...

ज्गां ज्गां तों साथ ग्लाबी, तूँ विचों की खटिया। जाह! ह्सनां दे पहिरेदारा, खूद दिन दीवीं ल्टिआ। तूँ ल्टिआ मैं पुटिआ उयारा,हश्र दोहां दा मिलदा। आ कॅडिआ...

काहदी सज़ा मिली है तैनृ, की कर बैठों पुठा। फुलां दे घर आउण बहारां, तूँ रुठे दा रुठा। ख़ुशबू चोर पाखंडी जां तूँ, रात बराते मिलदा। आ कॅडिआ...

कुझ ते बोल दिलां दी अड़िआ, बिन पुछिआं मैं दॅसी। किस दे हिजरों ख़ार बण गिउं, कौण तेरे मन वॅसी। चुभन तेरी में हस के सिह लां, भेत 'च खोहलें दिल दा। आ कॅडिआ...

कुर्बानी

विच समुँदर जा के मरदी मर जांदी है।
पर उह सँची लोक कहावत कर जांदी है।
दूर पहाड़ों गागर चुकी नदी निमाणी,
फृही फृही करके साग़र भर जांदी है।

ठल्दा नहीं दरिया

(मध् पूरब दी उथल पुथल दे नां)

सूरज उथे दिन दीवीं कल ड्रिआ सी, चँन वी तिकआ इस गुठों अज चिड़आ है। कावां ने जो रल के कूंज च्राई सी, कावां नृ अज कूँजां आ के फड़िआ है। उह भ्लड़ वी भ्ला लोकीं भूल जांदे, दिन दा भुलिआ शाम जो विहड़े विद्या है। पाणी दी एक बूंद बूंद जद मिल जांदी, ठल्दा नहीं दिशा उह वगदा भिरेआ है। वारे शाह दे कोलों वी उह बिझआ ना, खेड़े हारे लख वसीला घड़िआ है।

उही है एह सितारा

(अमरीका दीआं 2008 दीआं चोणां दे नां)

उही है लिशक इसदी, उही है इह सितारा। सरघीआं दा सूचक, प्रभात दा इशारा। इस तों बिना वी अँबर तारे अनेक सोहिंदे, इस नाल तारा मंडल दा होर ही नज़ारा। कल वी उडीकदे सी उह क़ाफ़िले ख़लोते, *उह बुझ गिआ अचानक,इह लिशिकआ दुबारा। तद् वी ते क़ाफ़िले सी, ऐसे उमीद तुर पऐ, अफ़सोस कट गई राह, बदली कोई आवारा। इह वाट है लमेरी, रात घुप हनेरी, नोहा दा पूर भरिआ, दूर है किनारा। हण क़ाफ़िले 'च वेखो रुलिया ना चोर होवे, चोरां ते *राहज़ना लई चानण नहीं गवारा।

^{*}उह:जे.उैफ़.क़े

^{*}इह:बराक-उबामा

^{*}बदली-कोई-आवारा:क़ातिल

^{*}राहज़न:डाकू,धाड़वी।

तूँ साथों मुख ना मोड़ीं

तूँ साथों म्ख ना मोड़ीं, असीं कुझ लैण नहीं आऐ। तेरी सोभा ई स्ण के आ गए सां, रहिण नहीं आऐ। असां परदेसीआं दी, जोगीआं वाली ही फेरी है, है कटणी सफ़र विच साडी, तां ऐथे बहिण नहीं आऐ। त्रॅं ऐहो आखिआ सी ना, सरां है इह मुसाफ़िर लई, असीं पाहरू बणे हां, इस सरां विच सौण नहीं आऐ। दिलां दी तरब वी छेडें, कहें ख़ामोश वी रहीउ, असीं कोई असीआं बातां, तां ऐथे पौण नहीं आऐ। बणे नहीं फुल् जां तारा, रता वी हिरख नहीं सान्, अजाईों ॲथर् दी जून वी, पर जीण नहीं आऐ। किसे ने की पता कोलों, बणा के की किहा होणा, सिरां दे भार आए हां, विगोचा लाह्ण नहीं आऐ। जे मंग के ही लिआ, ते की लिआ दरबार तेरे 'चों, तेरा दीदार वी होवे ना, इह वी सहिण नहीं आऐ।

छनकणे

ख़ाली छनकणे छणका के, सानृँ ना विराया कर। साडी एक नहीं सुणनी, सानृँ ना बुलाइआ कर।

ना साथों दूर ही जावें, ना साडे कोल बहि राज़ी, जे टस तों मस नहीं होणा,तां किसे ना दुहराइआ कर।

तेरा निहोरा कि साडे दिल 'च की है की पता तैनृ, तूँ सभ कुझ जाण के अैवें, बहाने ना बणइआ कर।

तेरे नगमिआं विच है किते दस ज़िक्र तक साडा? तृँ बातां रहिण दे बातां, बुतंगड़ ना बनाइआ कर।

जे सँ ची गॅल स्णनी आखणी, फ़ितरत नहीं तेरी, गॅलां धी नू किह के, नोहां नृ ना सुनाइआ कर।

असीं ते दिलों हां तेरे , है तेरे ही दिलों रहिणा, ज़रा जिही अख खुलॄण ते, ना अैवें खिसक जाइआ कर।

नाल सलूक दे बोल वे माही

नाल सलूक दे बोल वे माही,बोल ना फिकड़े बोल। नैण नेणां दी करन मजूरी,पर ना सहिण कुबोल। नाल सलूक दे.

उह मेले हर रोज़ मनाईए, इह मेला एक वारी। वेखीं इस विच खोह ना बहीए,इको वस्त पिआरी। फड़ लै नाल फड़ा दे उंगली, रहीए कोलो कोल। नाल सलूक दे...

तूँ साडे अंग संग रहें, ना दुनीआं रहे पराई। तूं रुस जावें तां फिर साडी, होणी नहीं रसाई। बिन तेरे इह मेला सखणा, ख़ाली ढोल 'मढोल। नाल सलूक दे...

एक तेरी मुसकान 'च साडे,लिशकण चन हज़ारां। चानणीआं ख़ुशबोआं सानृँ, तेरे नाल बहारां। तेरे बाझों चपटी धरती, किहड़ा आखू गोल। नाल सलूक दे...

दूर स्रग तों असां की लैणा,साथ निभे एक तेरा। उस स्रग विच जां ना मिलिआ,तेरा चेहरा म्हरा। ऐसे धृत समाऐ उह वी, चारे तबक फरोल। नाल सलूक दे...

लैला खालिद

25 साला लैला ख़ालिद,1969 विच रोम तों ऐथन वल जांदे TWA दे हवाई जहाज़ नृ अग़वा करके हीथ्रो (लंदन) हवाई अडे 'त उतरी सी। इस क़िस्म दी शाइद इह पहिली घटना सी जो एक फ़लस्तीनी मृटिआर वलों अंतरराष्ट्री परिवार साहवें फ़लस्तीनीआं दी होणी बारे रोस प्रगट करदिआं उतारी गई सी, जिस विच किसे दा कोई जानी जां माली नुक़सान करन दा मनशा नहीं सी ते ना ही होइआ सी। उस पिछों जो वापरिआ उह हुण इतिहास है। इस कविता दा आरनभ 1969 विच ही होइआ सी।

जद लैला ख़ालिद पुछिआ, अक के आखिर कार। मेरा तँबू सिर नहीं ढक्दे मैं हो गई आं मुटिआर। असीं देस बिगाने रहि गए, कटण गऐ दिन चार।

असीं किवें सराहीए उस नृ, साडा लुटिआ जिस घर बार। जद आपणे घर मुड़ जाण दे, कोई दिंसे ना आसार। रॅब हिमतां आपे दितीआं, उह तुर पई हो तैयार।

उह चढ़ पई नीले अँबरीं, हवा 'ते हो अस्वार। हाइफ़ा हाइफ़ा कूकदी, लंघ सत समुंदर पार।

उहदी झांजर छणकी हीथ्रो, गई यूरप विच छणकार। उहदे पैण भुलेखे थां थां, 'ते कँबी हर सरकार।

उदों चूड़ा शॅकी बण गिआ ते सांवली हर मुटिआर। पर कौमी परिवार ने, उहदी छडी गल विसार।

कैंपां विच रुलींदीआं, इंज पुशतां लंघीआं चार। बे - वतनां, बे - घरां दी, जद किसे ना पुछी सार।

इस ना इिनसाफ़ त्रासदी, लिआ रूप करूपा धार। अज एक धिर बिजली लिशकदी, बिन गरजों सुटदी साड़।

दूजी बलदा बिरख है, जो अग उते उस्वार। इह खेड अगन दी खेडदे, इहनां दोहां जाणा हार।

उठ दीन दुनी दे मुनसफ़ा, सांभ आपणा परिवार। घर सभनां नूँ लोड़ीए, सभनां नूँ रुज़गार सभ कोट कचहिरी खोल दे, हुण होर ना सोच विचार।

कोमल शाइर

पशोरा सिंघ ढिंलें जी होरां नाल मेरा दोहरा रिश्ता है, एक तां शाइर होवण दा दूजा लाहौरी होवण दा। मेरा लड़कपन वी लाहौर गुज़रिआ ते ढिलों होरां दी जमन भों वी जॅलो मोड़ लागले एक पिंड जंडिआला है। वंड तो पहिलां मेरे ते ढिलों जी होरां दे पिंड विचाले कोई नहिर कोई ख़ाला नहीं सी पैंदा।

वंड दी वंड अजिहा वंडिया है कि ह्ण असीं उस होणी नू याद कर के अपनीयाँ अखां सिलीआं कर बहिने हाँ, इह किहो जेही हिजरत सी जिहड़ी असां अपने ही घर तों घर अंदर नू कीती है। मैं अमृतसर जंमिआ। मेरा टबर टीर उथों उठ के अज देगाज़ीआबाद आ वसिआ। ते ढिलों जी होरां दा टबर वंड पिछों भखने जा बैठा। इंज इह तबादला होइआ।

बाबा सोहन सिंघ भखना होरां नू कौण नहीं जाणदा। मेरे लई ऐस तों वडा मेरा की स्भाग हो सकदा है कि अज मैं जिहड़े दो अखर रच रिहा हाँ उह सोहन जी होरां दे किसे जी बारे नें। पशोरा जी होरां दी शाइर होवन तों वख एक वडयाई होर इह वी दिसदी है कि उहनां दा तालुक अपनी धरती लई जूझदे टबर जिहनां अपना सारा कुझ अपने नज़रीए दे नावें ला दिता, उस नाल है।

पशोरा सिंघ ढिंलें जी होरां दी वडयाई दा दूजा गुण उहनां दी बनतगीरी ते बोली दी सोहनी वरतों वी है। उहनां दी नज़म धीआं पढ़ के बह्त वध्या लगा, जिस विच उहनां ऐस वितकरे ते सिधी सिधी चोट कीती है जिस कारण असीं एक जी नू तां बह्त वडिआउने हाँ पर दूजे नू निंददे हाँ। मेरी अपनी शाइरी दा वी मौजू इनसानी मसाइल ते इह निके निके एहसास ई हुंदे ने, इंज लगदा है जो मैं

आखना सी उह पए आंहदे नें।

मैं आस करदा हाँ कि ढिलों होरीं हमेश इंज दा ही स्लखना लिखदे रहिण। मैं शाहम्खी ते देवनागरी विच उहनां दी ऐस किताब नू दिलों बजाँन जी आइआं आख़दा हाँ ते आस करदा हाँ कि इह सिलसिला हमेश जारी रहवेगा।

बाबा नजमी, लाहौर

कोमल शाईर

पशौरा सिघ ढिल्लों जी होरां नाल में रा दोहरा रिश्ता है, एक तां शाइर होवण दा दूजा लाहौरी होवण दा। में रा लड़ कपन वी लाहौर गुज़ रिआ ते ढिलों होरां दी जमन भों वी जलो मोड़ लागले एक पिंड जंडियाला है। वंड तो पहिलां मेरे ते ढिलों जी होरां दे पिंड विचाले कोई नहिर कोई खा़ला नहीं सी पैंदा।

वंड दी वंड अजिहा वंडिया है कि हि,ण असीं उस होणी नू याद कर के अपनीयाँ अखां सिलीआं कर बहिने हाँ, इह किही जेही हिजरत सी जिहेड़ी असां अपने ही घर तों घर अंदर नू कीती है। मैं अमृतसर जंमिओ। मेरा टबर टीर उथों उठ के अज देगाजीआबाद आ वसिओ। ते ढिलीं जी होरांदा टबर वंड पिछों भखने जा बैठा। इंज इह तबादला होइआ।

बाबा सोहन सि घ भखना होरां नू कौण नहीं जाणदा। मेरे लई ऐस तों वडा मेरा की सुभाग हो सकदा है कि अज मैं जिहेड़े दो अखर रच रिहा हाँ उह सोहन जी होरां दे किसें जी बारे नें। पशोरा जी होरां दो शाइर होवन तों वख एक वडयाई होर इह वी दिसदी हैं कि उहनां दा तालुक अपनी धरती लई जूझदे टबर जिहेनां अपना सारा कुझ अपने नज रीए दे नावें ला दिता, उस नाल हैं।

पशौरा सि घ जो होरां दो वडयाई दा दूजा गुण उहनां दी बनतगीरी ते बोली दी सोहनी वरतों वी है। मेरी अपनी शाइरी दा वी मौजू इनसानी मसाइल ते इह निके निके एहसास ई हुं देने, इंज लगदा है जो मैं आखना सी उह पए आंहदे नें। मैं आस करदा हाँ कि ढिलों होरीं हमेश इंज दा ही सुलखना लिखदे विच उहनां दी ऐस किताब नू दिलों बजाँ जी आइआं आख दा हाँ ते आस करदा हाँ कि इह सिलसिला हमेश जारी रहवेगा।

बाबा नजमी,लाहौर

